बालबोधव्याकरण।



(प्रथम भाग)

हिंदीभाषामें संस्कृतका संक्षिप्तव्याकरण

लेखक—

श्रीयुत पंडित पन्नालालजी बाकलीवाल.

प्रकाशक—

श्रीजैनबालाविश्राम, आरा.

वीर नि॰ सं॰ २४४८

द्वितीयसंस्करण

प्रयोजन

यद्यपि संस्कृत भाषाको सरलतासे सीखनेकेलिये इससमय अनेक पुस्तकें हिन्दी भाषा में प्रकाशित हुई हैं, तो भी इस व्याकरणके पढ़नेसे बालकोंको जितना शीघ्र एवं साधुबोध होता वैसा दूसरी पुस्तकसे नहीं होता इसमें भाषाका परिवर्तन किया गया है परन्तु पं० पन्नालालजी ने प्राचीन आचार्योंके नियमोंमें हेर फेर नहीं किया है इसीसे यह ग्रन्थ अधिक उपयोगी है। इसीकारण विश्रामके पठन क्रममें भी यह रक्खा गया है। इसकी प्रथमावृत्ति समाप्त हो गई अतः विश्रामको पण्डितजीकी आज्ञा प्राप्तकर इसे फिर छपाना पड़ा। इसके प्रकाशनार्थ स्थानीय रईस बाबू हरनाम दासजीकी स्त्रीने ७५०) रु० भेट दिये हैं। इसलिये विश्राम उनका आभारी है। यह द्वितीय संस्करण पहलेसे अधिक उपकारी होगा क्योंकि इसमें सन्धिके सूत्र एवं और कई बातें बढ़ा दी गई हैं।

सेविका—

चन्दाबाई जैन,

भूमिका।

—:o:—

विदित हो कि, भारतवर्षीय दिगम्बरजैनयूनिवर्सिटीकी प्रवेशिका कक्षाके पाठक्रममें (कोर्समें) कातन्त्ररूपमालादि सस्कृत भाशाके प्राचीन व्याकरण पढाये जाते हैं. यद्यपि इनमें कातन्त्ररूपमाला बहुत ही सरल है परन्तु इसके साथ सान्वयार्थ धर्मशास्त्र काव्य कोषादि पढाये जाते हैं. सो विद्यार्थियोंको सन्धि विभक्ति समासादिका ज्ञान न होनेके कारण सुकुमारमति बालकोंको इनके पढनेमें बहुत ही क्लेश भोगना पड़ता है जिसका फल यह ही होता है कि, सुकुमारमति बालकगण धर्मशास्त्रादिके पढनेमें हताश होकर प्रत्येक विषयकी खड २ परीक्षा लेनेका नियम होनेसे केवलमात्र व्याकरण पढनेमें ही उत्सुक रहते हैं परन्तु उसमें भी किसी प्रकारका रस न देखकर अनेक विद्यार्थी अधबीचमें ही पढना छोड देते हैं अनेक विद्यार्थी व्याकरणके साथ २ धर्मशास्त्र भी अतिशय परिश्रमपूर्वक तोतेकी तरह पढलेते हैं परन्तु शब्दज्ञान न होनेके कारण उनका पढना न पढना प्राय॰ एकसा ही रहता है और अत पाठशालाओंका जैसा चाहिये वैसा फल देखनेम नहिं आता इस कारण विद्याविभागके (युनिवर्सिटीके) प्रबधकर्ता महाशयोंने धर्मशास्त्रादि पढनेसे पहिले सन्धि विभक्ति समासादिके ज्ञान करादेनेकी अत्यावश्यकता समझ गतवर्षमें बालबोध कक्षाके पाचवें खडमें शब्दरूपावली धातुरूपावली समासचक्र वा उपक्रमणिकाके पढानेका नियम बनाया है. परन्तु दिगम्बरजैनपरीक्षालयके (युनिवर्सिटीके) स्थापक (मुख्य प्रबंधकर्ता वा डाइरेक्टर) श्रीयुत विद्वद्वर्य पंडित गोपालदासजी बरैया आदिने इसमें भी विशेष सुभीता

नहिं देखकर विचार किया कि, यदि शब्दरूपावली आदिकी जगह संस्कृत भाषाका एक व्याकरण ही (जो कि सरल हिंदी भाषामें लिखा हो और संक्षेपसे सब ही विषय आ जाय) पढाया जाय तो अच्छा हो जब ऐसा व्याकरण हिन्दी भाषामें नहीं देखा तो उक्त महाशयने बड नगरके प्रतिष्ठोत्सवके समय मुझे अनुरोध किया कि "तुम ऐसा व्याकरण शीघ्र ही लिख दो जो सर्वोपयोगी हो" तब उनकी यह उचित आज्ञा शिरोधारण करके मैंने यह बालबोध नामका संक्षिप्त व्याकरण लिखा है

व्याकरणमें सन्धि, विभक्ति, कारक और समास ये ४ विषय मुख्य गिने जाते हैं इस कारण ये विषय कुछ विस्तारसे लिखकर तद्धितादि अन्यान्य विषय दिग्दर्शनमात्र लिखे गये हैं जहा तक मुझसे बना समस्त विषय सरलताके साथ लिखे हैं बलके सरलता करनेकेलिये उदाहरणमें दिये हुये संस्कृत वाक्योंमें प्राय सन्धि भी नहिं की गई है

जो बालक मन लगाकर परिश्रमपूर्वक गुरु मुखसे समझ २ कर इस व्याकरणको पढ लेंगे तथा इसके साथ हितोपदेशादि कोई गद्यपद्यमय एक ग्रन्थ पढकर व्याकरणके समस्त विषयोंके उदाहरण घटित करलेंगे तो संभव है कि, उन विद्यार्थियोंकेलिये, प्रवेशिका कक्षाके समस्त विषय अल्पायासमें ही हस्तामलकवत् हो जायगे तथा इस व्याकरणमें उदाहरण भी किसी मतके पोषक नहीं दिये गये हैं जिससे क्या जैनी क्या अजैनी सर्व साधारण संस्कृत पढनेवाले विद्यार्थी इसे पढकर असीम लाभ उठा सके हैं. अर्थात् मैंने अपनी तुच्छ बुद्धिशक्त्यनुसार सर्वोपयोगी बनानेमें कोई त्रुटि नहीं की है परन्तु जब इसको पढकर सर्वसाधारण संस्कृतविद्याभिलाषी विद्यार्थियोंका कुछ भी हितसाधन होगा तो मैं अपने इस परिश्रमको सफल समझूंगा

अन्तमें पाठक महाशयोंको प्रगट हो कि इस व्याकरणको छपते समय मैं बंबईमें नहीं था सो वैयाकरणाचार्य विद्वद्वर्य पंडित ठाकुर प्रशादजी शर्म्मा प्रधानाध्यापक संस्कृत जैनविद्यालय बंबईने तथा साहित्यशास्त्री प्रियवर भाई जवाहिरलाल शाकलीवाल अध्यापक दिगम्बरजैनपाठशाला बंबईने कृपा करके इसके संशोधनमें बहुत कुछ परिश्रम किया है अतएव इन महाशयोंका मैं बहुत ही उपकार मानता हूं.

बरवासागर जि० झांसी
२५-७-१०२ ईस्वी

संस्कृतविद्याभिलाषियोंका हितैषी,
ग्रंथकर्ता—
पन्नालाल बा० दि० जैन.





श्रीपरमात्मने नमः ।

बालबोधव्याकरण ।



दोहा ।

देवशास्त्रगुरुधर्मको, प्रणमि त्रियोग समार ।
बालबोधव्याकरण शुभ, लिखूं सकलहितकार ॥ १ ॥



१ । जिससे शब्दोंकी व्युत्पत्ति होय, और शुद्ध शुद्ध लिखना पढना आजावे, उस विद्याको व्याकरण कहते हैं ।—

सिद्धो वर्णसमाम्नायः ॥ १ ॥

अर्थः-(वर्णसमाम्नायः) अक्षरोंका समुदाय अथवा पाठक्रम जो है सो (सिद्धः) स्वयं सिद्ध है, अर्थात् अनादि कालसे प्रसिद्ध है. जैसे—

२। अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ। क ख ग घ ङ। च छ ज झ ञ। ट ठ ड ढ ण। त थ द ध न। प फ ब भ म। य र ल व। श ष स ह। इन ४७ चिन्होंको ४७ वर्ण और सब वर्णोंको (अक्षरोंको) वर्ण-समाम्नाय वा वर्णमाला कहते हैं।

तत्र चतुर्दशादौ स्वराः ॥ २ ॥

अर्थः-(तत्र) तिस वर्णसमुदायमें (आदौ) पहिलेके (चतुर्दश) चौदह अक्षर हैं ते (स्वराः) स्वर हैं. जैसे, अआ इई उऊ ऋॠ ऌॡ ए ऐ ओ औ।

दश समानाः ॥ ३ ॥

अर्थः-अक्षरोंकी समुदायमेंसे पहिलेके (दश) दश अक्षर हैं ते (समानाः) समान हैं अर्थात् इनका नाम समान स्वर है. जैसे,-अआ इई उऊ ऋॠ ऌॡ.

---

(१) शब्दके उस टुकडेका नाम वर्ण व अक्षर है कि जिसका फिर टुकडा न हो सके जैसे ज्ञानं इस शब्दमें ज् + ञ् + आ + न् + अ, ये पांच अक्षर हैं।

(२) ये १४ अक्षर अन्य किसी अक्षरकी सहायताके विना ही स्वयं उच्चारण करनेमें (बोलनेमें) आते हैं, इसकारण इनका नाम स्वर है।

तेषां द्वौ द्वावन्योऽन्यस्य सवर्णौ ॥ ४ ॥

अर्थः-(तेषां) उन समान स्वरोंके (द्वौ द्वौ) दो दो अक्षर (अन्यः अन्यस्य) एक दूसरेका (सवर्णौ) सवर्णी यानी सजातीय हैं, जैसे-

अ आ ये दोनों वर्ण आपसमें सवर्णी हैं।
इ ई ये दोनों वर्ण आपस में सवर्णी हैं।
उ ऊ ये दोनो वर्ण आपसमें सवर्णी हैं।
ऋ ॠ ये दोनों वर्ण आपसमें सवर्णी हैं।
ऌ ॡ ये दोनों वर्ण आपसमें सवर्णी हैं।

पूर्वो ह्रस्वः ॥ ५ ॥

अर्थः-इन दो दो वर्णोंमेंसे [पूर्वः] पहिला अक्षर [ह्रस्वः] ह्रस्व है, जैसे,-अ इ उ ऋ ऌ।

परो दीर्घः ॥ ६ ॥

अर्थः—इन दो दो वर्णोंमेंसे [परः] अगला अक्षर (दीर्घः) दीर्घ है, जैसे,-आ ई ऊ ॠ ॡ।

स्वरोऽवर्णवर्जो नामी ॥ ७ ॥

अर्थः-[अवर्णवर्जः] अ आ को छोड कर [स्वरः] स्वर जो है सो [नामी] नामी कहलाता है जैसे इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ। कहीं कहीं पर अवर्ण कहा जाय

तो अथा दो अक्षर समझना चाहिये इसीपकार इवर्णसे इ ई, उवर्णसे उ ऊ, ऋवर्णसे ऋ ॠ, लृवर्णसे लृ ॡ समझना चाहिये.

एकारादीनि सन्ध्यक्षराणि ॥ ८ ॥

अर्थः-(एकारादीनि) एकारको आदि ले अर्थात् ए ऐ ओ औ ये ४ अक्षर [सन्ध्यक्षराणि] सन्ध्यक्षर कहे जाते हैं इसीकारण ये सब के सब दीर्घ हैं।

कादीनि व्यञ्जनानि ॥ ९ ॥

अर्थः-[कादीनि] क से लेकर ह पर्यन्त जो अक्षर हैं वे [व्यञ्जनानि) व्यञ्जन कहलाते हैं । जैसे,-

क ख ग घ ङ, च छ ज झ ञ, ट ठ ड ढ ण, त थ द ध न, प फ ब भ म, य र ल व, श ष स ह। इन सब व्यञ्जनोंमें बोलनेकेलिये प्रत्येक अक्षरमें एक एक 'अ' मिला हुवा है जिस समय इनमें अ अथवा और कोई भी स्वर नहीं रहता है तो ये स्पष्टतासे बोलनेमें नहीं आ सके और २१ वें सूत्रके अनुसार अगले अक्षरमें मिल जाते हैं।

---

(१) सन्धिसे बनेहुये जैसे अ+इ=ए। अ+ए=ऐ। अ+उ=ओ। अ+ओ=औ। (२) जिनका उच्चारण स्वरके सहारेसे हो वे अक्षर व्यंजन कहलाते हैं।

जब व्यञ्जनों में मिलते हैं तो उन मिले हुये व्यञ्जनोंको संयुक्ताक्षर वा सयोगी अक्षर कहते हैं और ये स्वररहित शुद्ध व्यञ्जन इस प्रकार लिखे जाते हैं—
क्ख्ग्घ्ङ् च्छ्ज्झ्ञ् ट्ठ्ड्ढ्ण् त्थ्द्ध्न् प्फ्ब्भ्म् य्र्ल्व् शष्स्ह्।

ते वर्गाः पंच पंच पंच ॥ १० ॥

अर्थः–(ते) वे ककारादि अक्षर कसे म पर्यन्त (पंच पंच) पाच पाच अक्षर मिलकर (पंच) पाचों ही (वर्गाः) वर्गसंज्ञावाले हैं। जैसे–

क ख ग घ ङ ये पाच अक्षर कवर्ग कहलाते हैं.
च छ ज झ ञ ये पांच अक्षर चवर्ग कहलाते हैं.
ट ठ ड ढ ण ये पाच अक्षर टवर्ग कहलाते हैं.
त थ द ध न ये पाच अक्षर तवर्ग कहलाते हैं.
प फ ब भ म ये पाच अक्षर पवर्ग कहलाते हैं.

वर्गाणां प्रथमद्वितीयाः शषसाश्चाघोषाः ॥ ११ ॥

अर्थ–(वर्गाणां) वर्गोंके (प्रथमद्वितीयाः) पहिले और दूसरे अक्षर (च शषसाः) और श ष स (अघोषाः) अघोष संज्ञावाले हैं. जैसे,–कख चछ टठ तथ पफ शषस ये १३ अक्षर अघोष कहलाते हैं

घोषवन्तोऽन्य ॥ १२ ॥

अर्थ–(अन्ये) बाकी बचे हुए जो बीस अक्षर हैं ते (घोषवन्तः) घोषवंत कहलाते हैं । जैसे,–गघड जझञ डढण दधन बभम यरलव ह ।

अनुनासिका ङञणनमाः ॥ १३ ॥

अर्थः–(ङञणनमाः) ङ ञ ण न म ये पाच अक्षर (अनुनासिकाः) अनुनासिक कहलाते हैं ।

अन्तःस्था यरलवाः ॥ १४ ॥

अर्थः–(यरलवाः) य र ल व ये ४ अक्षर (अन्तस्थाः) अन्तःस्थ कहलाते हैं ।

ऊष्माणः शषसहाः ॥ १५ ॥

अर्थः–[शषसहाः] श ष स ह ये ४ अक्षर (ऊष्माणः) ऊष्म कहलाते हैं ।

अः इति विसर्जनीयः ॥ १६ ॥

अर्थ–(अः इति) अकारके आगे जो दो विन्दु हैं वह (विसर्जनीयः) विसर्ग हैं, यह विसर्ग व्यजन है, इस कारण इसका उच्चारण करनेकेलिये अकार स्वर लगाया गया है ।

× क इति जिह्वामूलीयः ॥ १७ ॥

अर्थः-[× क इति] कख से पहले जब × ऐसा अथवा ऐसा ˘˘ चिन्ह होता है वह [जिह्वामूलीयः] जिह्वामूलीय अक्षर कहलाता है, यह भी व्यञ्जन है इसमें 'क' उदाहरणको उच्चारण करनेकेलिये लगाया गया है।

पँ इत्युपध्मानीयः ॥ १८ ॥

अर्थः-[पँ इति] प और फ के उपरि [‴] इसप्रकार गजकुम्भाकृति अथवा पफसे पहिले ‴ अथवा ≈ ऐसा जो चिन्ह होता है, वह [उपध्मानीयः] उपध्मानीय अक्षर कहलाता है; यह व्यञ्जन है, इसमें प उच्चारणकेलिये लगाया गया है।

अं इत्यनुस्वारः ॥ १९ ॥

अर्थ---[अं इति] किसी अक्षरके मस्तक पर [-] ऐसा चिन्ह होता है वह [अनुस्वारः] अनुस्वार कहलाता है, वह भी व्यञ्जन है स्वरके सहारेसे बोलनेमें आता है, इसी कारण इस सूत्रमें अकार उच्चारणके लिये लगाया गया है।

अँ इस प्रकारके उपरिके अक्षरको अर्धचन्द्राकार या सानुनासिक वर्णका चिन्ह कहते हैं।

वर्णोच्चारणविधि।

उपर्युक्त समस्त वर्णोंका नीचे लिखे नियमानुसार उच्चारण करना चाहिये।

१–अ आ क ख ग घ ङ ह और विसर्ग इन ९ अक्षरोंका नाम कंठ्यवर्ण हैं इसकारण इनको कंठसे उच्चारण करना चाहिये।

२–इ ई च छ ज झ ञ य श इन ९ अक्षरोंको तालव्य कहते हैं इस कारण इनको प्रायः तालवे पर जिह्वा लगा कर बोलना चाहिये।

३–ऋ ॠ ट ठ ड ढ ण र ष इन ९ अक्षरोंको मूर्धन्य कहते हैं, इस कारण इनको मूर्द्धापर (तालुवेसे भी ऊपर) जीभ लगाकर बोलना चाहिये।

४–ऌ ॡ त थ द ध न ल स ये ९ अक्षर दन्त्य कहाते हैं, इसकारण इन सबोंको दांतपर जीभ लगाकर बोलना चाहिये।

५–उ ऊ प फ ब भ म और उपध्मानीय ये ८ अक्षर ओष्ठ्य हैं। इसकारण इनको होंठोंसे बोलना चाहिये।

६–ङ ञ ण न म इन पाच अक्षरोंका उच्चारणस्थान नासिका भी है, इसीकारण इनको अनुनासिक कहते हैं।

७–ए ऐ कंठ और तालुवेसे बोले जाते हैं।

८–ओ औ कंठ और होठोंसे बोलना चाहिये।

९–व दांत और होठसे बोला जाता है।

१०–जिह्वामूलीयका उच्चारण स्थान जीभकी जड़ है।

११–अनुस्वार और अर्धचन्द्राकार नासिकासे उच्चारित होते हैं।

व्यञ्जनमस्वरं परवर्णं नयेत् ॥ २१ ॥

अर्थ–स्वररहित व्यंजनोको अगले अक्षरमें जोड देना चाहिये। जैसे–

स् + त् + र् – ई = स्त्री।
म् + अ + त् + स् + य् + अः=मत्स्य।
क् + ल् + आ + न् + त् + इः = क्लान्तिः।
श् + र् + ई + क् + ऋ + ष् + ण् + अः = श्रीकृष्णः।

अनातिक्रमयन् विश्लेषयेत् ॥ २२ ॥

अर्थ—मिले हुये अक्षरोंको (अनतिक्रमयन्) क्रमसे (विश्लेषयेत्) जुदा जुदा करे। इसको विश्लेष्य कहते हैं। जैसे–

व्याख्या = व् + य् + आ + ख् + य् + आ।
शम्भु = श् + अ + म् + भ् + उः।
गुरोः = ग् + उ + र् + र् + ओः।
क्लान्तिः = क् + ल् + आ + न् + त् + इः।

अथ सन्धि प्रकरण।

१। दो वर्णोंके मिलने को अथवा दोनोंके मिलने से किसी वर्ण में विकारमात्र होनेको सन्धि कहते हैं।

सन्धि तीन प्रकारकी होती है स्वरसन्धि, व्यञ्जनसन्धि और विसर्गसंधि।

साधु + उत्तम: = साधूत्तम:।
वायु + ऊर्मिः = वायूर्मिः = वायूर्मिः।
वधू + उत्तमा = वधूत्तमा।
वधू + ऊढा = वधूढा।
मातृ + ऋणम् = मातॄणम्।
मातृ + ऋकारेण=मातॄकारेण।
कृ + ऋकारः = कॄकारः।
कृ + ऋकारेण = कॄकारेण।

अवर्ण इवर्णे ए ॥ २५ ॥

अर्थ–(इवर्णे) इ ई के परे रहते (अवर्णः) अ आ जो है सो (ए) ए हो जाता है और परका लोप होजाता है। जैसे– देव + इन्द्रः = देवेन्द्रः। गण + ईशः = गणेशः। महा+ इन्द्रः = महेन्द्रः। महा + ईशः = महेशः, इत्यादि। चौबीसवें सूत्रमें चकार ग्रहण अनुक्तसमुच्चयार्थ होनेसे कहीं २ अकारका व मनस् शब्दके अंत भागका लोप हो जाता है, जैसे–हल ईषा = हलीषा, लांगल + ईषा = लांगलीषा, मनस्+ ईषा = मनीषा।

उवर्णे ओ ॥ २६ ॥

अर्थ–[उवर्णे] उ ऊ के परे रहते अ आ (ओ) ओ हो जाता है, और परका लोप हो जाता है। जैसे–हित+उपदेशः = हितोपदेशः। नव+ऊढा = नवोढा। महा+उत्सवः = महोत्सवः। माला + ऊढा = मालोढा।

ऋवर्णे अर् ॥ २७ ॥

अर्थः-(ऋवर्णे) ऋ ॠके परे रहते अआ (अर्) अर् होजाता है और परका लोप होजाता है। जैसे,-

शीत।ऋतुः=शीततुंः। महा+ऋषिः=महर्षिः।

परन्तु २४ वें सूत्रमें चकारका ग्रहण अनुक्तसमुच्चयार्थ होनेसे ऋण शब्दके परे रहते ऋण, प्र, वसन, वत्सतर, कम्बल, दश, इन शब्दोंके अकारको आर् हो जाता है।जैसे-
ऋण।ऋणम्=ऋणार्णम्। प्र+ऋणम्= प्रार्णम्।
वसन+ऋणम् = वसनार्णम्।वत्सतर+ऋणम्=वत्सतरार्णम्।
कम्बल+ऋणम्=कम्बलार्णम्। दश+ऋणम्=दशार्णम्।

ऌवर्णे अल् ॥ २८ ॥

अर्थः-(ऌवर्णे) ऌ ॡ के परे रहते अ आ (अल्) अल् होजाता है और परका लोप होजाता है। जैसे-
नव।ऌकारः=नवल्कारः। सा+ऌकारेण=सल्कारेण॥

एकारे ऐ ऐकारे च ॥ २९ ॥

अर्थः-(एकारे) एकार [च ऐकारे] और ऐकारके परे रहते, अ आ [ऐ] ऐ होजाता है और परका लोप होजाता है। जैसे-

तव-एषा=तवैषा। मम+ऐश्वर्यम्=ममैश्वर्यम्। सदा+एव = सदैव। महा+ऐश्वर्यम्=महैश्वर्यम्।

चकारके ग्रहण करनेसे कहीं कहीं अ का लोप होजाता है. जैसे, प्र। एलयति = प्रेलयति । अद्य+एव = अद्येव । इह+एव = इहेव इत्यादि ।

ओकारे औ औकारे च ॥ ३० ॥

अर्थ-(ओकारे) ओकार (च) और (औकारे) औकारके परे रहते अ आ जो है सो (औ) औ होजाता है और परका लोप होजाता है. जैसे—
तव+ओदनम् = तवौदनम् । भव+औपरम् = भवौपरम् ।
महा+औषधी = महौषधी । महा+औषधम् = महौषधम् ।
चकारके ग्रहणसे कहीं कहीं अवर्णका भी लोप होजाता है किन्तु ओम्के परे होते नित्य लोप होता है। जैसे—
परा+ओखति = परोखति। प्र। ओषधीयति = प्रोषधीयति।
बिम्ब-ओष्ठः = बिम्बोष्ठः । स्थूल+ओतुः = स्थूलोतुः ।
अद्य+ओम् = अद्योम् । सा+ओम् = सोम् इत्यादि ।

इवर्णो यमसवर्णे न च परो लोप्यः ॥ ३१ ॥

अर्थ-(असवर्णे) असवर्ण स्वरके परे रहते (इवर्णः) इ ई (यम्) य् को प्राप्त होजाय [च] और (परः) पर स्वर जो है सो (लोप्यः न) लोप करना नहीं चाहिये। जैसे—यदि+अपि=यद्यपि । इति+आदिः=इत्यादिः । ज्ञातिः+उन्नतिः=ज्ञात्युन्नतिः। नदी+एव=नद्येव । देवी+आगता=देव्यागता । इत्यादि ।

वमुवर्णः ॥ ३२ ॥

अर्थः—असवर्ण स्वरके परे रहते (उवर्णः) उ ऊ (वम्) व् को प्राप्त होजाय और पर स्वरका लोप नहीं होय। जैसे,— मधु+अत्र=मध्वत्र । मधु+आनय= मध्वानय। वधू+आसनम्= वध्वासनम् । वधू+ऋतम्=वध्वृतम्, इत्यादि ।

रमृवर्णः ॥ ३३ ॥

अर्थः— असवर्ण स्वरके परे रहते (ऋवर्णः) ऋ ॠ (रम्) र् को प्राप्त हो जाय और पर स्वरका लोप नहीं होय । जैसे पितृ + अर्थः = पित्रर्थः । मातृ + अर्थः = मात्रर्थः । पितृ + आलयः = पित्रालयः । भ्रातृ + उदयः = भ्रात्रुदयः । इत्यादि ।

लम् लृवर्णः ॥ ३४ ॥

अर्थ— असवर्ण स्वरके परे रहते (लृवर्णः) लृ ॡ (लम्) ल् को प्राप्त होजाता है और पर स्वरका लोप नहीं होता । जैसे— लृ + अनुबन्धः = लनुबन्ध । लृ + आकृतिः = लाकृतिः । गम्लृ + औगतौ = गम्लौगतौ । इत्यादि ।

ए अय् ॥ ३५ ॥

अर्थ.—किसी भी स्वरके परे रहते (ए) ए जो है सो (अय्) अय् हो जाता है और पर स्वरका लोप नहीं होता- जैसे,— ने + अनं = नयनं। चे + अनं = चयनं।

ऐ आय् ॥ ३६ ॥

अर्थः-किसी भी स्वरके परे रहते [ऐ] ऐ जो है सो [आय्] आय् होजाता है और पर स्वरका लोप नहीं होता. जैसे,- नै + अकः = नायकः । चै + अकः = चायकः, इत्यादि ।

ओ अव् ॥ ३७ ॥

अर्थः-किसी भी स्वरके परे रहते (ओ) ओ जो है सो (अव्) अव् होजाता है और पर स्वरका लोप नहीं होता. जैसे,- लो + अवनं = लवन । पो + अनं = पवनं । इत्यादि ।

औ आव् ॥ ३८ ॥

अर्थः-किसी भी स्वरके परे रहते (औ) औ जो है सो (आव्) आव् हो जाता है और पर स्वरका लोप नहीं होता । जैसे,-लौ+अकः = लावकः। पौ + अकः = पावकः इत्यादि ।

गोशब्दके आगे स्वर आनेसे कहीं २ सन्धि नहीं होती तथा कहीं अव्की जगह अव होता है परन्तु अक्ष और इन्द्रशब्दके परे रहनेसे अव ही होता है । जैसे - गो + अजिनं = गो अजिनं = गवाजिनम् । गो + अश्वौ = गो अश्वौ = गवाश्वौ । गो + अक्षः = गवाक्षः । गो + इन्द्रः = गवेन्द्रः ।

अयादीनां यवलोपः पदान्ते न वा लोपे तु प्रकृतिः ॥ ३९ ॥

अर्थः-(पदान्ते) पदान्तमें (अयादीनां) अय् आय् अव् आव् के (यवलोपः) य् व् का (नवा) कहीं-२ लोप होजाता है. और (लोपे तु) यकार वकारके लोप होनेपर फिर वहां (प्रकृतिः) जैसाका तैसा रहता है. अर्थात् वहां पर फिर कोई संधि नहीं होती । जैसे-ते + आहुः = तय्+आहुः = त आहुः । तस्मै+आसनम् = तस्माय्+आसनं = तस्मा आसनं । पटो+इह = पटव्+इह, पट = इह । असौ + इन्दुः, असाव् + इन्दुः = असा इन्दुः । इत्यादि ।

एदोत्परः पदान्ते लोपमकारः ॥ ४० ॥

अर्थः-(पदान्ते) पदान्तमें (एदोत्परः) ए और ओ से परेका (अकारः) अकार जो है सो (लोपम्) लोपको प्राप्त होजाय और लोप हुये अकारको कोई कोई ऽ इस चिन्हसे प्रगट करते हैं । जैसे-मुने+अव=मुनेव=मुनेऽव । गुरो+अव=गुरोव=गुरोऽव । ते+अत्र=तेत्र = तेऽत्र । पटो +अत्र = पटोत्र = पटोऽत्र । इत्यादि ।

न व्यञ्जने स्वराः सन्धेयाः ॥ ४१ ॥

अर्थः-(व्यञ्जने) व्यंजन अक्षरके परे रहते (स्वराः)

स्वर जे हैं ते (सन्धेयाः) सन्धि करने योग्य (न) नहीं हैं। जैसे,– देवीगृहम् । पटु हस्तम् इत्यादि ।

परन्तु तद्धितका य परे आता है तो ऋ को र् और रास्ते के नाप अर्थमें गो शब्द आगे यूतिः शब्द आता है वो ओ को अव् हो जाता है. जैसे,–पितृ+यम् = पित्र्यम् । भ्रातृ+यम् = भ्रात्र्यम् । मातृ–यम् = मात्र्यम् । गो–यूतिः = गव्यूतिः (दो कोश) इत्यादि ।

इति स्वरसन्धि ।



अथ प्रकृतिसन्धिः ।

ओदन्ता अ इ उ आ निपाताः स्वरे प्रकृत्या ॥ ४२ ॥

अर्थः–(स्वरे) स्वरके परे रहते (ओदन्ता) ओ जिन के अन्तमें है ऐसे निपात और (अ इ उ आ निपाताः) अ इ उ आ ये ४ निपात है वे [प्रकृत्या] प्रकृतिसे रहें अर्थात् इनकी सन्धि नहीं होय । जो शब्द अनादिसे चले आते हैं व्याकरणके किसी सूत्रसे भी सिद्ध नहीं होते, उनको संस्कृत व्याकरण बनानेवाले निपात कहते हैं। [ओदन्ताः] इस पदमें अन्त पदका ग्रहण करनेसे अ इ उ आ ये ४ निपात स्वर अकेले समझने–किसी शब्दमें मिले हुये नहीं लेने

पंचमे पंचमान् तृतीयान्न वा ॥ ४७ ॥

अर्थः– (पंचमे) वर्गोंके पंचम अक्षर परे रहनेसे वर्गोंके प्रथम अक्षर विकल्पसे (पंचमान्) उसी वर्गके पचम अक्षरोंको प्राप्त हो जाते हैं (वा) कहीं २ (तृतीयान्) तीसरे अक्षरोंको भी (न) प्राप्त नहीं होंय. अर्थात् प्रत्ययका पंचम अक्षर परे रहते नित्य पंचम अक्षर होय । जैसे,–

वाक् + मती = वाङ्मती ।
अच् + मात्रम् = अञ्मात्रम् = अज्मात्रम् ।
पट् + मुखानि = पण्मुखानि = पड्मुखानि ।
तत् + नयनम् = तन्नयनम् = तद्नयनम् ।
त्रिष्टुप् + मिनोति = त्रिष्टुम्मिनोति = त्रिष्टुब्मिनोति

प्रत्ययका पचम अक्षर परे रहते जैसे,–

वाक् + मात्रम् वाङ्मात्रम् । अच् + मात्रम् = अञ्मात्रम् । पट् + मात्रं = पण्मात्रं । तत् + मय = तन्मयं । ककुप् + मात्र ककुम्मात्रं इत्यादि ।

वर्गप्रथमेभ्यः शकारः स्वरयवरपरश्छकारम् ४८

अर्थः–पदान्तमें (वर्गप्रथमेभ्यः) वर्गोंके प्रथम अक्षरों से परे रहने वाला (शकारः) शकार (नवा) कहीं २ (छकारम्) छकारको प्राप्त होजाता है. परन्तु शकार कैसा हो कि (स्वरयवरपरः) स्वर अथवा य व र इनमेंसे कोई

अक्षर परे होय तथा कोई २ आचार्योंने ल और छ वं ग्र न म इन अक्षरोंके परे रहते भी शकार को छकार होना कहा है जैसे,– वाक् + शूरः = वाक्छूर – वाक्शूर । अच् + शेषः = अच्छेषः = अच्शेषः । पट् + श्यामाः = पट्छ्यामाः = पट्श्यामाः । तत् + श्वेत = तच्छ्वेतं = तच्श्वेत । त्रिष्टुप् + श्रुतम् = त्रिष्टुप्छ्रुतम् = त्रिष्टुप्श्रुतम् । तत् श्लक्षणम् = तच्छ्लक्षणम् = तच्श्लक्षणम् । तत्+श्मशानम् = तच्छ्मशानम् = तच्श्मशानम् इत्यादि । इन रूपोंमें त को च ५०–५१–५४–वें सूत्रोंके लगानेसे होगया है ॥

तेभ्य एव हकारः पूर्वचतुर्थं न वा ॥ ५९ ॥

अर्थः–(तेभ्यः एव) उन्हीं वर्गके प्रथम अक्षरोंसे परे–का (हकारः) हकार जो है सो (नवा) कहीं २ (पूर्वचतुर्थ) पहिले वर्गके अक्षरवाले वर्गका चौथा अक्षर अर्थात् घ झ ढ धु भ होजाता है फिर ४६ वें सूत्रसे पहिले अक्षरोको तृतीय अक्षर होजाता है । जैसे,–

वाक्+हीनः = वाग्घीनः = वाग्हीनः ।
तत्+हितम्=तद्धितम्=तद्हितम् ।
ककुप्+हास =ककुब्भासः=ककुब्हासः । इत्यादि ।

पररूपं तकारो लचटवर्गेषु ॥ ६० ॥

अर्थः–(लचटवर्गेषु) ल और चवर्ग टवर्गके परे ...

पदान्तका नकार (अनुस्वारपूर्वम्) अनुस्वारपूर्वक 'शकार) शकारको प्राप्त होजाता है. जैसे,— भवान्+चरति=भवांश्चरति। पठन्+ छात्रः = पठंश्छात्रः।

टठयोः षकारम् ॥ ५८ ॥

अर्थः– (टठयोः) ट ठ के परे रहते पदान्तका नकार जो है सो अनुस्वारपूर्वक [षकारम्] षकारको प्राप्त हो जाता है. जसे,— भवान्–टीकते = भवांष्टीकते । भवान्–ठकारेण = भवांष्ठकारेण ।

तथयोः सकारम् ॥ ५९ ॥

अर्थ,–[तथयोः] त थ के परे रहते पदान्तका नकार जो है सो अनुस्वारपूर्वक [सकारं] सकारको प्राप्त हो जाता है. जैसे,— भवान् + तरति = भवांस्तरति। भवान् + थुडति = भवांस्थुडति ।

ले लम् ॥ ६० ॥

अर्थः–(ले) ल के परे रहते पदान्तका नकार जो है सो (लम्) अनुनासिकपूर्वक लकारको प्राप्त हो जाय. जैसे,-

(१) इस सूत्रमें "कार" के न मिलनेसे सानुनासिककी सूचना होती है अर्थात् इस सूत्रमें (लम्) की जगह (लकारम्) ऐसा पद दे देते तो अनुस्वारकी ही अनुवृत्ति आती, परन्तु आचार्य्यने अनुस्वारकी जगह सानुनासिक जतानेकी इच्छा से ही "कार" को छोडकर (लम्) ऐसा पद रक्खा है.

भवान् + लिखति = भवाल्लिखति । भवान् + लुना
= भवाल्लुनाति.

जझञशकारेषु ञकारम् ॥ ६१ ॥

अर्थ.— पदान्तका नकार (जझञशकारेषु) ज झ ञ
श के परे रहते [ञकारम्] ञकारको प्राप्त हो जाय। जैसे,—
भवान्+जयति=भवाञ्जयति। भवान्+झपयति = भवाञ्झप-
यति । भवान्+ञकारेण = भवाञ्ञकारेण। भवान् + शेते
= भवाञ्शेते ॥

शि न्चौ वा ॥ ६२ ॥

अर्थः—पदान्तका न [शि] शकार के परे रहते (वा)
कहीं २ (न्चौ) न्च को प्राप्त होजाता है और ६१ वें सूत्रके
अनुसार न् को ञ होकर ४८ वें सूत्र से कहीं २ श को छ
होजाता है जैसे,—भवान्+शूरः = भवाञ्च्शूर = भवाञ्च्छूरः
और ६१ वें सूत्रसे भवाञ्शूरः इत्यादि ॥

तवर्गश्चटवर्गयोगे चटवर्गौ ॥ ६३ ॥

अर्थः—[तवर्गः] त थ द ध न जे हैं ते [चटवर्ग-
योगे] च छ ज झ ञ तथा ट ठ ड ढ ण के योग होने पर
[चटवर्गौ] च छ ज झ ञ और ट ठ ड ढ ण यथासंख्य
होजाते हैं, जैसे,—भवान्च्शूर = भवाञ्च्शूरः ।

ड्ढणपरस्तु णकारम् ॥ ६४ ॥

अर्थः– (ड्ढणपरस्तु) ड, अथवा ढ अथवा ण परेवाला पदान्त नकार है सो तो (णकारम्) ण को प्राप्त हो जाय। जैसे,–भवान्–डीनः = भवाण्डीनः। भवान्–ढौकते = भवाण्ढौकते। भवान् = णकारेण = भवाण्णकारेण॥

मोऽनुस्वारं व्यंजने ॥ ६५ ॥

अर्थः–(व्यजने) व्यंजनके परे रहते (मः) पदान्तका मकार (अनुस्वारं) अनुस्वारको प्राप्त हो जाय जैसे,–त्वम् लुनासि = त्वं लुनासि। त्वम् यासि = त्वं यासि।

वा विरामे ॥ ६६ ॥

अर्थः–पदान्तका मकार (विरामे) विरामके परे रहते (वा) कहीं २ अनुस्वार को प्राप्त होजाय। जैसे,– देवानाम् = देवानां। रामाणाम् = रामाणां। देवम् = देवं।

वर्गे तद्वर्गपंचमं वा ॥ ६७ ॥

अर्थः–पदान्तका मकार (वर्गे) वर्गका कोई अक्षर परे रहै तो (वा) कहीं २ (तद्वर्गपंचमं) उसी वर्गका पांचवा अक्षर होजाता है। जैसे,–

(१) परवर्णाभावो विरामः। अर्थ,–आगे वर्णका न होना उस को विराम कहते हैं।

त्वम्–करोषि = त्वङ्करोषि = (६५ वें सूत्रसे) त्वं करोषि
त्वम्–चरसि = त्वञ्चरसि = (६५ वें सूत्रसे) त्वं चरसि।
त्वम्–टीकसे = त्वण्टीकसे = (६५ वें सूत्रसे) त्वं टीकसे।
त्वम्–तरसि = त्वन्तरसि = (६५ वें सूत्रसे) त्वं तरसि।
त्वम्–पचसि = त्वम्पचसि = (६५ वेंसूत्रसे) त्वं पचसि।

इति चतुर्थसंधिः।

अथ विसर्जनीयसन्धिः।

विसर्जनीयश्चे छे वा शम् ॥ ६८ ॥

अर्थः–(चे छे वा) च और छ के परे रहते [विसर्जनीयः] विसर्ग जो है सो (शम्) श को प्राप्त होजाय। जैसे,–कः चरति = कश्चरति। कः छादयति = कश्छादयति ॥

टे ठे वा षम् ॥ ६९ ॥

अर्थः–(टे ठे वा) ट और ठ के परे रहते विसर्ग जो है (षम्) ष् को प्राप्त होजाता है जैसे,–कः टीकते = कष्टीकते।

ते थे वा सम् ॥ ७० ॥

अर्थः–(ते थे वा) त और थ के परे रहते विसर्ग [सम्]

स् को प्राप्त होजाता है जैसे- कः तरति = कस्तरति । कः शुदति = कश्शुदति ॥

कखयोर्जिह्वामूलीयं न वा ॥ ७१ ॥

अर्थः-(कखयोः) क ख के परे रहते विसर्ग जो है सो (न वा) कहीं २ (जिह्वामूलीयं) जिह्वामूलीयको प्राप्त हो जाता है-जैसे,-कः करोति = क ᳵ करोति । कः खनति = क ᳵ खनति ॥

पफयोरुपध्मानीयं न वा ॥ ७२ ॥

अर्थः-(पफयोः) प फ के परे रहते विसर्ग [न वा] कहीं २ (उपध्मानीय) उपध्मानीयको प्राप्त होजाता है । जैसे,-कः पचति = क ᳵ पचति । कः फलति = क ᳵ फलति ॥

शे षे से वा वा पररूपम् ॥ ७३ ॥

अर्थः-(शे षे से वा) श अथवा ष अथवा स के परे रहते विसर्ग (वा) कहीं २ (पररूप) अगले रूप को प्राप्त हो जाता है. जैसे-कः शेते=कश्शेते । कः षण्डे=कष्षण्डे । कः साधुः=कस्साधुः ॥

अघोषस्थेषु शषसेषु वा लोपम् ॥ ७४ ॥

अर्थ-(अघोषस्थेषु) अघोष है परे जिनके ऐसे (शषसेषु)

श ष स के परे रहते विसर्ग जो है सो [वा] कहीं कहीं (लोपम्) लोपको प्राप्त हो जाता है । जैसे,—कः श्च्योतति = क श्च्योतति [७२ वें सूत्रसे] कश्श्च्योतति । कः ष्ठीवति = क ष्ठीवति (७२ वें सूत्रसे) कष्ष्ठीवति । कः स्तौति = क स्तौति (७२ वें सूत्रसे) कस्स्तौति ।

उमकारयोर्मध्ये ॥ ७५ ॥

अर्थ—(अकारयोर्मध्ये) दो अकारोंके बीचमें विसर्ग जो है सो (उम्) उ को प्राप्त होजाता है और फिर २६ वें सूत्रसे ओ होकर यदि पदान्त होय तो ४० वें सूत्रसे अकारका लोप भी हो जाता है। जैसे,—

कः अत्र = क उ अत्र = को अत्र = कोऽत्र ।

कः अर्थः = क उ अर्थः = को अर्थः = कोऽर्थः ।

पुनः+अत्रमें ८२ वें सूत्रसे रकार होकर पुनरत्र बनता है ।

अघोषवतोश्च ॥ ७६ ॥

अर्थः—[अघोषवतोः] अ और घोषवत् अक्षर के बीचका विसर्ग (च) भी उ को प्राप्त होजाता है और २६ वें सूत्र से फिर ओ होजाता है । जैसे,—

कः गच्छति = क उ गच्छति = को गच्छति ।

कः धावति = क उ धावति = को धावति ।

अपरो लोप्योऽन्यस्वरे यं वा ॥ ७७ ॥

अर्थः—(अन्यस्वरे) अकारको छोडकर अन्य स्वर के परे रहते [अपरः] अकारके परे का विसर्ग जो है सो (लोप्यः) लोप करना चाहिये (वा) अथवा (यं) यकारको प्राप्त होजाता है और जहा विसर्गका लोप हो जाता है वहांपर ८६ वें सूत्रसे फिर सन्धि नहीं होती । जैसे,—

कः इह = क इह = कय् इह = कयिह ।
कः उपरि = क उपरि = कय् उपरि = कयुपरि ।
कः एषः = क एषः = कय् एषः = कयेषः ।

आभोभ्यामेवमेव स्वरे ॥ ७८ ॥

अर्थः- (स्वरे) स्वरके परे रहते (आभोभ्याम्) आकार और भो भगो अघो से परे का विसर्ग जो है सो (एवमेव) ऐसे ही होय अर्थात् लोप अथवा यकारको प्राप्त हो जाय,—

देवाः आहुः = देवा आहुः, देवाय् आहुः = देवायाहुः ।
भोः अत्र = भो अत्र = भोय् अत्र = भोयत्र ।
भगोः अत्र = भगो अत्र = भगोय् अत्र = भगोयत्र ।
अघोः अत्र = अघो अत्र = अघोय् अत्र = अघोयत्र ।

घोषवति लोपम् ॥ ७९ ॥

अर्थः- (घोषवति) घोषवत् अक्षरोंके परे रहते आ और भो भगो अघोका विसर्ग (लोपम्) लोपको प्राप्त हो

जाता है। जैसे, -देवाः गताः देवा गता। भोः यासि भोयासि। भगोः व्रज भगो व्रज। अघोः यज = अघो यज।

नामिपरो रम्॥ ८०॥

अर्थः- (नामिपरः) नामीसे परे का विसर्ग (रम्) रकारको प्राप्त होजाता है जैसे,—सुपिः = सुपिर्। सुतुः = सुतुर्॥

घोषवत्स्वरेषु॥ ८१॥

अर्थः -(घोषवत्स्वरेषु) घोषवत् और स्वरोंके परे रहते नामीसे परेका विसग र् को प्राप्त होजाता है। जैसे,—मुनिः गच्छति = मुनिर्गच्छति। पटुः गच्छति = पटुर्गच्छति। पटुः अत्र = पटुरत्र इत्यादि॥

रप्रकृतिरनामिपरोऽपि॥ ८२॥

अर्थः— घोषवत् और स्वरके परे रहते (रप्रकृतिः) रैप्रकृतिवाला विसर्ग (अनामिपरः अपि) अनामिसे परेका भी र् को प्राप्त होजाता है। जैसे,—पितः याहि = पितर्याहि। पुनः गच्छति = पुनर्गच्छति। पुनः पितः अत्र = पितरत्र। पुनः अत्र = पुनरत्र।

... रे हुये विसर्गको रप्रकृति विसर्ग कहते हैं।

अह्नोऽरेफे ॥ ८३ ॥

अर्थः—रकारको छोड़ बाकीके घोषवत् और स्वरोंके परे रहते अहन्‌शब्दके विसर्गको भी र् होजाय। और र के परे रहनेसे ७९वें सूत्रसे उ होकर २६ वें सूत्रसे ओ हो जाता है। जैसे,—अहः गणः = अहर्गणः। अहः अत्र = अहरत्र। अहः जयति = अहर्जयति। अहः आयाति = अहरायाति। अहः हसति = अहर्हसति। (७९ वें और २६ वें सूत्रसे) अहः राजते अहोराजते। अहः रात्रम् = अहोरात्रं॥

न स्यादिभे ॥ ८४ ॥

अर्थः—किन्तु (स्यादिभे) सिआदिका[१] भं के परे रहते अहन् शब्दके विसर्गको र् (न) नहीं होता. यहां पर ७९ वें सूत्रसे उ होकर २६ वें सूत्रसे ओ होजाता है. जैसे,—अहःभ्याम् = अहोभ्याम्। अहः भिः = अहोभिः। अहः भ्यः = अहोभ्यः॥

एषसपरो व्यंजने लोप्यः ॥ ८५ ॥

अर्थः—(व्यंजने) व्यंजनके परे रहते (एषसपरः) एष और स के परेका विसर्ग (लोप्यः) लोप कर देना चाहिये। जैसे,—एष चरति = एषः चरति। सः टीकते = स टीकते। एषः शेते = एष शेते। सः पचति = स पचति।

---

१ सि औ जस् आदि विभक्तियोंके २१ प्रत्यय होते हैं, उनमें के भ्याम्, भिस्, भ्यस् के परे रहते।

न विसर्जनीयलोपे पुनः सन्धिः ॥ ८६ ॥

अर्थः—(विसर्जनीयलोपे) विसर्जनीयके लोप किये बाद (पुनः) फिर वहा (सन्धिः न) संधि नहीं होती। जैसे,—क इह। देवा आहुः। भो अत्र।

रो रे लोपं स्वरश्च पूर्वो दीर्घः ॥ ८७ ॥

अर्थः—(रे) रकारके परे रहते [रः] र [लोपम्] लोपको प्राप्त होजाता है [च] और [पूर्वः स्वरः] पहिला स्वर जो है सो [दीर्घः] दीर्घ होजाता है. जैसे,—अग्निः रथेन [८१ वें सूत्रसे] अग्निर् रथेन = अग्नी रथेन। पुनः रात्रिः (८२ वें सूत्रसे) पुनर् रात्रिः = पुनारात्रिः॥

द्विर्भावं स्वरपरश्छकारः ॥ ८८ ॥

अर्थः—(स्वरपर) स्वर है परे जिसके ऐसा (छकारः) छ (द्विर्भाव) दो पणेको प्राप्त होजाता है. अपिके अधिकारसे कहीं २ पदान्तके दीर्घसे परेका छकार भी द्वित्व होजाय फिर ५४ वें सूत्रसे पहिले छकारको च होजाय। जैसे,—

वट+छाया = वटच्छाया। कवि+छन्दः = कविच्छन्दः। बाला×छादयति=बालाच्छादयति। आ×छादयति = आच्छादयति। मा×छिदत् = माच्छिदत्। इत्यादि।

णत्वविधि।

८८। ऋवर्ण, र और ष के परेका अनन्त्य न, ण हो जाता है। यदि ऋवर्ण र ष और न के बीचमें स्वर, कवर्ग, पवर्ग य व ह अनुस्वार और विसर्ग होय अथवा नकार अन्य शब्दमें होय तो भी न को ण होजाता है. किन्तु तवर्गयुक्त न को ण नहीं होता। जैसे,—

नृ×नाम् = नृणाम्। नॄ+नाम् = नॄणाम्। चुर्नम् = चूर्णम्। तृष्ना = तृष्णा। स्वरादिक बीचमें रहते जैसे,—तारणम्। नराणाम्। पुरुषाणाम्। हरिणा। पुरुषेण। बृहणम्। अन्य शब्दमें नकार होनेपर जैसे,—वर्षभोग्येन = वर्षभोग्येण, इत्यादि। उपर्युक्त वर्णोंके अतिरिक्त अन्य वर्णोंके बीचमें आनेसे ण नहीं होता। जैसे,—मूर्छना, अर्चना, स्पर्शनं। पदान्तमें जैसे,—रामान, हरीन्, पितॄन्। तवर्गसंयुक्त जैसे,—क्रन्तनम्। भ्रान्तिः। हुन्दिः। रन्धनम् इत्यदिमें ण नहीं होता।

स्वाभाविक णत्व।

टंकणं कंकणं कोणः कणिका किकणः कणः।
किंकिणी काकिणी काणः कुणपः किणपकणौ॥ १॥
कल्याणं मत्कुणो घोणी कुणिर्घोणी गणः कणा।
अणुर्वाणो पणो गौणं गणिका लवणं गुणः॥ २॥

लावण्य चणकं घोणा विपणि स्थाणुरापणम्।
स्थूणा पण्यं फणा पाणि. कफोणिः पणवः फणः ॥ ३ ॥
निक्काणो निक्कणः क्काणः नैपुण्यं द्युमणिः फणी।
वाणिज्यं उल्वणा वाणी वाणः शोणो वणिक् तथा ॥ ४ ॥
वीणा शाणो मणिर्भाणः पणाया पुण्यशोणिते।
एते स्वाभाविकणत्वयुक्ताः शब्दाः प्रकीर्त्यते ॥ ५ ॥

इन शब्दोंमें नकारका णकार नहीं हुवा है किन्तु स्वाभाविक ही णकार है।

षत्वविधि।

८९। नामी स्वर वा क् र् से परेका पदमध्यवर्ती स् षकारको प्राप्त होजाता है। अनुस्वार वा विसर्ग बीचमें होय तो भी होजाय किन्तु सात् प्रत्ययके स् का ष् नहीं होता। जैसे,—भविष्यत। मुनिषु। जिगीषा। गोषु। नौषु। बीचमें जैसे,—ज्योतींषि। चक्षूंषि। हविःषु। सात् प्रत्यय का जैसे,—अग्निसात्, धूलिसात् इत्यादिमें ष नहीं हुवा।

९०। समास होनेपर पितृ और मातृ शब्दके परे स्वस शब्दका स् मूर्द्धन्य ष् होजाता है। जैसे,—पितृष्वसा। मातृष्वसा।

स्वाभाविकषत्व।

आमिष, ईषु, उषा, उष्णीषः, ऋषिः, औषधिः, औषधम्, कषायः, काषायः, कलुषं, कल्मषं, कल्माषः,

धातुनिष्पन्न ईकारान्त पुलिंग सुधी शब्दके रूप ।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	सुधीः	सुधियौ	सुधियः
द्विती०	सुधियं	सुधियौ	सुधियः
तृ०	सुधिया	सुधीभ्यां	सुधीभिः
च०	सुधिये	सुधीभ्यां	सुधीभ्यः
पं०	सुधियः	सुधीभ्यां	सुधीभ्यः
ष०	सुधियः	सुधियोः	सुधियां
स०	सुधियि	सुधियोः	सुधीषु
स०	हे सुधीः	हे सुधियौ	हे सुधियः

सेनानी अग्रणी ग्रामणी प्रधी वातप्रमी आदिक शब्दोंको छोड कर कुधी अल्पधी सूक्ष्मधी स्थूलधी सुश्री यवक्री गतह्री नी आदि शब्दोंके रूप इसी प्रकार जानने । ये शब्द स्त्रीलिङ्गमें भी इसी प्रकारसे बनते हैं ।

ईकारान्त पुंलिंग सेनानी शब्दके रूप ।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	सेनानीः	सेनान्यौ	सेनान्यः
द्वि०	सेनान्यम्	सेनान्यौ	सेनान्यः
तृ०	सेनान्या	सेनानीभ्यां	सेनानीभिः
च०	सेनान्ये	सेनानीभ्यां	सेनानीभ्यः
पं०	सेनान्यः	सेनानीभ्यां	

प०	सेनान्य.	सेनान्यो.	सेनान्याम्
स०	सेनान्यां	सेनान्यो	सेनानीषु
स०	हे सेनानी	हे सेनान्यौ	हे सेनान्य

इसी प्रकार अग्रणी ग्रामणी प्रधी, आदिक शब्दोंके रूप भी जानने।

उकारान्त पुल्लिंग गुरु शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	गुरुः	गुरू	गुरवः
द्वि०	गुरुम्	गुरू	गुरून्
तृ०	गुरुणा	गुरुभ्यां	गुरुभिः
च०	गुरवे	गुरुभ्यां	गुरुभ्यः
पं०	गुरोः	गुरुभ्यां	गुरुभ्यः
ष०	गुरोः	गुर्वोः	गुरूणाम्
स०	गुरौ	गुर्वोः	गुरुषु
सं०	हे गुरो	हे गुरू	हे गुरवः

इसीप्रकार ऋतु, भानु, साधु, विधु, मेरु, तरु, विष्णु, शिशु, सेतु, परमाणु, कृशानु, बाहु, रिपु, शत्रु, वायु, वसु आदि समस्त उकारान्त पुलिङ्ग शब्दोंके रूप जानने।

ऊकारान्त पुंल्लिंग कटप्रू शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	कटप्रूः	कटप्रुवौ	कटप्रुवः
द्वि०	कटप्रुवम्	कटप्रुवौ	कटप्रुवः

तृ०	कटप्रुवा	कटप्रूभ्यां	कटप्रूभिः
च०	कटप्रुवे	कटप्रूभ्यां	कटप्रूभ्यः
पं०	कटप्रुवः	कटप्रूभ्यां	कटप्रूभ्यः
ष०	कटप्रुवः	कटप्रुवोः	कटप्रुवां
स०	कटप्रुवि	कटप्रुवोः	कटप्रूषु
सं०	हे कटप्रूः	हे कटप्रुवौ	हे कटप्रुवः

वर्षाभू पुनर्भू खलपू आदिको छोड़कर प्रतिभू आत्मभू स्वयंभू मित्रभू अग्निभू मनोभू आदि समस्त ऊकारान्त शब्दोंके रूप इसी प्रकार ही जानने।

ऋकारांत पुल्लिंग पितृ शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	व०
प्र०	पिता	पितरौ	पितरः
द्वि०	पितरं	पितरौ	पितॄन्
तृ०	पित्रा	पितृभ्यां	पितृभिः
च०	पित्रे	पितृभ्यां	पितृभ्यः
पं०	पितुः	पितृभ्यां	पितृभ्यः
ष०	पितुः	पित्रोः	पितॄणाम्
स०	पितरि	पित्रोः	पितृषु
सं०	हे पितः	हे पितरौ	हे पितरः

इसीप्रकार भ्रातृ जामातृ सवितृ सव्येतृ देवृ नृ यातृ शब्दके रूप जानने। केवल नृ शब्दके षष्ठीके बहुवचनमें नृणां और नॄणां दो रूप बनेंगे। कर्तृ पातृ आदिक शब्दोंमें कुछ विशेष है

ऋकारान्त पुल्लिंग पातृ शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	पाता	पातारौ	पातारः
द्वि०	पातारम्	पातारौ	पातॄन्
तृ०	पात्रा	पातृभ्यां	पातृभिः
च०	पात्रे	पातृभ्यां	पातृभ्यः
पं०	पातुः	पातृभ्यां	पातृभ्यः
ष०	पातुः	पात्रोः	पातॄणाम्
स०	पातरि	पात्रोः	पातृषु
सं०	हे पातः	हे पातारौ	हे पातारः

इसी प्रकार कर्तृ दातृ हन्तृ गन्तृ भर्तृ श्रोतृ धातृ विधातृ ज्ञातृ वेतृ श्रोतृ नेतृ वक्तृ जन्तृ आदिक शब्दोंके रूप जानने।

ऐकारान्त पुल्लिंग रै शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	राः	रायौ	रायः
द्वि०	रायं	रायौ	रायः
तृ०	राया	राभ्यां	राभिः
च०	राये	राभ्यां	राभ्यः
पं०	रायः	राभ्यां	राभ्यः
ष०	रायः	रायोः	[illegible]
स०	रायि	रायोः	[illegible]
सं०	हे राः	हे रायौ	

ओकारान्त पुलिंग गो शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	गौः	गावौ	गावः
द्वि०	गाम्	गावौ	गाः
तृ०	गवा	गोभ्यां	गोभिः
च०	गवे	गोभ्यां	गोभ्यः
प०	गोः	गोभ्यां	गोभ्यः
ष०	गोः	गवोः	गवां
स०	गवि	गवोः	गोषु
सं०	हे गौः	हे गावौ	हे गावः

इसी प्रकार द्यो आदिक ओकारान्त शब्द जानने। गो शब्दके रूप पुंलिंग स्त्रीलिंगमे एकसे ही होते हैं, केवलमात्र लक्ष्य देखने से स्त्री पु भेद होता है। जहाँपर गो शब्दका पृथिवी अर्थ लेना हो वहा स्त्रीलिंग समझना।

औकारान्त पुल्लिंग ग्लौ शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	ग्लौः	ग्लावौ	ग्लावः
द्वि०	ग्लावं	ग्लावौ	ग्लावः
तृ०	ग्लावा	ग्लौभ्यां	ग्लौभिः
च०	ग्लावे	ग्लौभ्यां	ग्लौभ्यः
प०	ग्लावः	ग्लौभ्यां	ग्लौभ्यः

ष०	ग्लाव	ग्लावो	ग्लावाम्
स०	ग्लावि	ग्लावो	ग्लौपु
स०	हे ग्लौ	हे ग्लावौ	हे ग्लावः

स्त्रीलिंग व पुलिंग औकारान्त शब्दके रूप इसी प्रकार होते हैं।



स्वरान्त स्त्रीलिंग शब्दोंके रूप।

आकारान्त स्त्रीलिंग विद्या शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	विद्या	विद्ये	विद्या
द्वि०	विद्याम्	विद्ये	विद्याः
तृ०	विद्यया	विद्याभ्या	विद्याभि.
च०	विद्यायै	विद्याभ्या	विद्याभ्य·
प०	विद्याया	विद्याभ्या	विद्याभ्यः
ष०	विद्याया	विद्ययो	विद्यानाम्
स०	विद्यायाम्	विद्ययो·	विद्यासु
स०	हे विद्ये	हे विद्ये	हे विद्या.

इसी प्रकार शाला माला दोला महीला रम्भा रामा वामा कान्ता आर्या अंगना वनिता जाया माया दुर्गा उमा अम्बिका आख्या व्याख्या वात्या आदिक प्राय· समस्त आकारान्त शब्दों· के रूप जानने। केवल अम्बा अक्का अल्ला अत्ता आदिक

मातावाचक शब्दोंके सम्बोधनके एकवचनमें हे अम्ब, हे अक्क, हे अल्ल, हे अत्त बनता है।

इकारान्त स्त्रीलिंग गति शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	गति	गती	गतय:
द्वि०	गति	गती	गती:
तृ०	गत्या	गतिभ्या	गतिभि
च०	गत्यै,गतये	गतिभ्यां	गतिभ्य:
पं०	गत्या:,गते:	गतिभ्यां	गतिभ्य:
ष०	गत्या:,गते:	गत्यो:	गतीनाम्
स०	गत्या,गतौ	गत्यो:	गतिषु
सं०	हे गते	हे गती	हे गतय:

इसी प्रकार रुचि बुद्धि वृद्धि कीर्त्ति कान्ति मति छति युक्ति मुक्ति श्रेणि पक्ति शक्ति भक्ति ऋद्धि आलि रात्रि धरणि रजनि हानि आदिक प्राय: समस्त इकारांत स्त्रीलिंग शब्दोंके रूप जानने।

ईकारान्त स्त्रीलिंग नदी शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	नदी	नद्यौ	नद्य:
द्वि०	नदीम्	नद्यौ	नदी:
तृ०	नद्या	नदीभ्यां	नदीभि
च०	नद्यै	नदीभ्या	नदीभ्य:

प०	नद्या	नदीभ्या	नदीभ्यः
ष०	नद्याः	नद्यो	नदीनाम्
स०	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सं०	हे नदि	हे नद्यौ	हे नद्यः

इसी प्रकार गौरी गान्धारी वाणी भारती गायत्री सवित्री सरस्वती गोमती भामिनी क्रोष्ट्री महिषी मही सूत्री सौरमेयी मन्दाकिनी सती भागीरथी पुरी नारी पुरन्ध्री सुरसुन्दरी मृगी वनचरी देवी शर्वरी वरवर्णिनी सिंही हैमवती सौरन्ध्री धात्री धरित्री काली गुणवती पद्मिनी वानरी गायन्ती गच्छन्ती ददती आदिक शब्दोंके रूप जानने। किन्तु स्त्री श्री आदिक शब्दोंमें विशेष है।

ईकारान्त स्त्रीलिंग स्त्री शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	स्त्री	स्त्रियौ	स्त्रियः
द्वि०	स्त्रियं,स्त्रीम्	स्त्रियौ	स्त्रियः, स्त्रीः
तृ०	स्त्रिया	स्त्रीभ्यां	स्त्रीभिः
च०	स्त्रियै	स्त्रीभ्यां	स्त्रीभ्यः
प०	स्त्रियः	स्त्रीभ्यां	स्त्रीभ्यः
ष०	स्त्रियः	स्त्रियोः	स्त्रीणाम्
स०	स्त्रियाम्	स्त्रियोः	स्त्रीषु
सं०	हे स्त्रि	हे स्त्रियौ	हे स्त्रियः

ईकारान्त स्त्रीलिंग श्री शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	श्रीः	श्रियौ	श्रियः
द्वि०	श्रियं	श्रियौ	श्रियः
तृ०	श्रिया	श्रीभ्यां	श्रीभिः
च०	श्रियै,श्रिये	श्रीभ्यां	श्रीभ्यः
पं०	श्रियाः,श्रियः	श्रीभ्यां	श्रीभ्यः
ष०	श्रियाः श्रियः	श्रियोः	श्रियां,श्रीणाम्
स०	श्रियां,श्रियि	श्रियोः	श्रीषु
सं०	हे श्रीः	हे श्रियौ	हे श्रियः

इसी प्रकार धी ह्री आदिक शब्दोंके रूप जानने।

उकारान्त स्त्रीलिंग धेनु शब्दके रूप।

प्र०	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वि०	धेनुम्	धेनू	धेनूः
तृ०	धेन्वा	धेनुभ्यां	धेनुभिः
च०	धेन्वै, धेनवे	धेनुभ्यां	धेनुभ्यः
पं०	धेन्वाः, धेनोः	धेनुभ्यां	धेनुभ्यः
ष०	धेन्वाः ,धेनोः	धेन्वोः	धेनूनाम्
स०	धेन्वां, धेनौ	धेन्वोः	धेनुषु
सं०	हे धेनो	हे धेनू	हे धेनवः

१ अवी लक्ष्मी तरी तन्त्री ह्री धी श्री इन शब्दोंके प्रथमाके एक वचन में विसर्गका लोप नहीं होता।

इसी प्रकार उड, तनु, प्रियङ्गु, स्नायु, उरु, करेणु, चञ्चु रज्जु, कट्टु, साधु, कु, गुरु, लघु, स्वादु पटु, आदिक प्रायः समस्त उकारान्त स्त्रीलिंग शब्दोंके रूप जानने।

ऊकारान्त स्त्रीलिंग तनू शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	तनूः	तन्वौ	तन्व
द्वि०	तनूम्	तन्वौ	तनूः
तृ०	तन्वा	तनूभ्या	तनूभिः
च०	तन्वै	तनूभ्यां	तनूभि
प०	तन्वाः	तनूभ्या	तनूभ्य
ष०	तन्वा'	तन्वो	तनूनाम
स०	तन्याम्	तन्वो	तनुषु
स०	हे तनु	हे तन्वौ	हे तन

इसी प्रकार वधू, चन्दू, चम्पू, श्वश्रू, अलाबू, कच्छू, यव चमू, तण्डू, कमण्डलू कटू, फयङ्ख, कासू, आदि शब्दोंके जानने। भ्रू आदिक शब्दोंमें विशेष है।

ऊकारान्त स्त्रीलिंग भ्रू शब्दके रूप

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	भ्रूः	भ्रुवौ	भ्रुव
द्वि०	भ्रुवं	भ्रुवौ	भ्रु

ईकारान्त स्त्रीलिंग श्री शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	श्रीः	श्रियौ	श्रियः
द्वि०	श्रिय	श्रियौ	श्रियः
तृ०	श्रिया	श्रीभ्या	श्रीभिः
च०	श्रिये,श्रियै	श्रीभ्यां	श्रीभ्यः
पं०	श्रिया ,श्रियः	श्रीभ्यां	श्रीभ्यः
ष०	श्रियाः श्रियः	श्रियोः	श्रियां,श्रीणाम्
स०	श्रियां,श्रियि	श्रियोः	श्रीषु
सं०	हे श्रीः	हे श्रियौ	हे श्रियः

इसी प्रकार धी ह्री आदिक शब्दोंके रूप जानने।

उकारान्त स्त्रीलिंग धेनु शब्दके रूप।

प्र०	धेनु	धेनू	धेनव
द्वि०	धेनुम्	धेनू	धेनूः
तृ०	धेन्वा	धेनुभ्यां	धेनुभिः
च०	धेन्वै, धेनवे	धेनुभ्या	धेनुभ्यः
पं०	धेन्वाः, धेनोः	धेनुभ्या	धेनुभ्यः
ष०	धेन्वा ,धेनोः	धेन्वोः	धेनूनाम्
स०	धेन्वा, धेनौ	धेन्वोः	धेनुषु
सं०	हे धेनो	हे धेनू	हे धेनवः

१ अवी लक्ष्मी तरी तत्री ह्री धी श्री इन शब्दोंके प्रथमाके एक वचन में विसर्गका लोप नहीं होता।

इसी प्रकार ऊड, तनु, प्रियङ्गु, स्नायु, उर, करेणु, चञ्चु रज्जु, कद्रु, साधु, कु, गुरु, लघु, स्वादु कटु, आदिक प्रायः समस्त उकारान्त स्त्रीलिंग शब्दोंके रूप जानने।

ऊकारान्त स्त्रीलिंग तनू शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	तनूः	तन्वौ	तन्व
द्वि०	तनूम्	तन्वौ	तनूः
तृ०	तन्वा	तनूभ्यां	तनूभिः
च०	तन्वै	तनूभ्यां	तनूभि
पं०	तन्वाः	तनूभ्या	तनूभ्यः
ष०	तन्वाः	तन्वो	तनूनाम्
स०	तन्वाम्	तन्वो	तनुषु
सं०	हे तनु	हे तन्वौ	हे तन्वः

इसी प्रकार वधू, चमू, चम्पू, श्वश्रू, अलावू, कच्छू, यवागू, चमू, तण्डू, कमण्डलू कद्रू, कण्डू, कासू, आदि शब्दोंके रूप जानने। भ्रू आदिक शब्दोंमें विशेष है।

ऊकारान्त स्त्रीलिंग भ्रू शब्दके रूप

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	भ्रूः	भ्रुवौ	भ्रुवः
द्वि०	भ्रुवं	भ्रुवौ	भ्रुवः
तृ०	भ्रुवा	भ्रूभ्यां	भ्रूभिः

च०	भ्रुवै, भ्रुवे	भ्रूभ्यां	भ्रूभ्यः
पं०	भ्रुवा॰ भ्रुवः	भ्रूभ्या	भ्रूभ्यः
ष०	भ्रुवाः, भ्रुवः	भ्रुवोः	भ्रूणां भ्रुवाम्
स०	भ्रुवा, भ्रुवि	भ्रुवो॰	भ्रूषु
सं०	हे भ्रु	हे भ्रुवौ	हे भ्रुवः

इसीप्रकार भू सुभ्रू आदिक शब्दोंके रूप जानने। किन्तु सुभ्रू शब्दके सम्बोधनमें हे सुभ्रू ऐसा रूप होगा।

ऋकारान्त स्त्रीलिंग मातृ शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	माता	मातरौ	मातरः
द्वि०	मातरं	मातरौ	मातॄः
तृ०	मात्रा	मातृभ्यां	मातृभिः
च०	मात्रे	मातृभ्या	मातृभ्यः
पं०	मातुः	मातृभ्या,	मातृभ्यः
ष०	मातुः	मात्रोः	मातॄणाम्
स०	मातरि	मात्रो	मातृषु
सं०	हे मातः	हे मातरौ	हे मातरः

इसी प्रकार दुहितृ ननान्दृ यातृ आदि प्रायः समस्त ऋकारान्त स्त्रीलिंग शब्दोके रूप होते हैं। किन्तु स्वसृ शब्दके रूप पातृ शब्दकी तरह होते हैं। केवल द्वितीयाके बहुवचनमें स्वसॄः ऐसा रूप बनता है।

स्वरान्त नपुंसकलिंग शब्दोंके रूप।

—— ० ——

अकारान्त नपुंसकलिंग धन शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	धनम्	धने	धनानि
द्वि०	धनम्	धने	धनानि

शेषके रूप पुरुषकी तरह जानना।

इसी प्रकार दान ज्ञान ध्यान धन मित्र वस्त्र शास्त्र वसन पुण्य पाप सुख दुःख फल अरण्य विपिन गहन कानन इत्यादि शब्दोंके रूप जानने।

इकारान्त नपुंसकलिंग वारि शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वि०	वारि	वारिणी	वारीणि
तृ०	वारिणा	वारिभ्या	वारिभिः
च०	वारिणे	वारिभ्या	वारिभ्यः
पं०	वारिणः	वारिभ्या	वारिभ्यः
ष०	वारिणः	वारिभ्या	वारीणां
स०	वारिणि	वारिणो	वारिषु
सं०	हे वारि,हे वारे	हे वारिणी	हे वारीणि

दधि अस्थि अक्षि और सक्थि इन चार शब्दोंके सिवाय समस्त इकारान्त नपुंसकलिंग शब्दोंके रूप वारि शब्दकी तरह जानना।

इकारान्त नपुंसकलिंग दधि शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	दधि	दधिनी	दधीनि
द्वि०	दधि	दधिनी	दधीनि
तृ०	दध्ना	दधिभ्यां	दधिभिः
च०	दध्ने	दधिभ्यां	दधिभ्यः
पं०	दध्नः	दधिभ्यां	दधिभ्यः
ष०	दध्नः	दध्नोः	दध्नाम्
स०	दध्नि,दधनि	दध्नोः	दधिषु
सं०	हे दधे,हे दधि	हे दधिनी	हे दधीनि

इसीप्रकार अस्थि अक्षि व सक्थि शब्दके रूप जानने।

उकारान्त नपुंसकलिंग दारु शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	दारु	दारुणी	दारूणि
द्वि०	दारु	दारुणी	दारूणि
तृ०	दारुणा	दारुभ्यां	दारुभिः
च०	दारुणे	दारुभ्यां	दारुभ्यः
पं०	दारुणः	दारुभ्यां	दारुभ्यः
ष०	दारुणः	दारुणोः	दारूणाम्
स०	दारुणि	दारुणोः	दारुषु
सं०	हे दारु,हे दारो	हे दारुणी	हे दारूणि

प्रायः समस्त उकारान्त नपुंसकलिंग इसी प्रकार जानने।

६५। घ था के अतिरिक्त ह्रस्व स्वरान्त नपुंसकलिंग शब्द यदि विशेषण होता है तो ङे आदि विभक्तियोंके स्वर परे रहते एकवार पुंलिंग की तरह रूप होंगे और एकवार नपुंसकलिंगकी तरह होंगे। जैसे,—

अनादि + ङे = अनाद्ये वा अनादिने।

स्वादु + ङे = स्वाद्वे वा स्वादुने इत्यादि।

नपुंसकलिंगमें अन्य, अन्यतर, इतर, कतर, कतम इन शब्दोंके आगे सि अम् विभक्तिको द् हो जाता है। जैसे,—अन्य + सि = अन्यद्। इतर + अम् = इतरद्। अन्यतरद्। कतरद्। कतमद्। इन शब्दोंके अन्यान्य विभक्तियोंमें जैसे रूप बनेंगे वे सर्वादि प्रकरणमें बताये जांयगे।

६७। आकारान्त नपुंसकलिंग शब्द अकारान्त होकर उसके रूप धन शब्दकी तरह होंगे। इसीप्रकार एकारान्त ऐकारान्त शब्द इकारान्त होकर ठीक अनादि शब्दकी तरह रूप होंगे। और ओकारान्त औकारान्त शब्द ह्रस्व उकारान्त होकर स्वादु शब्दकी तरह होंगे। इसी प्रकार दीर्घ ईकारान्त ऊकारान्त शब्द ह्रस्व इकारान्त उकारान्त होकर उनके रूप वारि शब्द व दारु शब्दवत् होंगे।



व्यञ्जनान्त पुंलिंग शब्दोंके रूप ।

——:o:——

चकारान्त पुंल्लिग जलमुच् शब्दके रूप ।

	ए०	द्वि०	बहु०
प्र०	जलमुक्, जलमुग्	जलमुचौ	जलमुच
द्वि०	जलमुचम्	जलमुचौ	जलमुचः
तृ०	जलमुचा	जलमुग्भ्या	जलमुग्भिः
च०	जलमुचे	जलमुग्भ्या	जलमुग्भ्यः
पं०	जलमुच.	जलमुग्भ्यां	जलमुग्भ्यः
ष०	जलमुचः	जलमुचोः	जलमुचाम्
स०	जलमुचि	जलमुचोः	जलमुक्षु
सं०	हे जलमुक् हे जलमुग्,	हे जलमुचौ	हे जलमुचः

अञ्च् धातुसे पैदा हुए शब्दोंको छोड़कर समस्त चकारान्त शब्द इसी प्रकार जानने ।

जकारान्त पुंल्लिग सुखभाज् शब्दके रूप ।

	ए०	द्वि०	बहु०
प्र०	सुखभाक्,सुखभाग्	सुखभाजौ	सुखभाज.
द्वि०	सुखभाज	सुखभाजौ	सुखभाज
तृ०	सुखभाजा	सुखभाग्भ्यां	सुखभाग्भिः
च०	सुखभाजे	सुखभाग्भ्यां	सुखभाग्भ्यः
पं०	सुखभाजः	सुखभाग्भ्यां	सुखभाग्भ्यः

ष०	सुखभाज.	सुखभाजोः	सुखभाजाम्
स०	सुखभाजि	सुखभाजोः	सुखभाक्षु
सं०	हे सुखभाक्,सुखभाग्	हे सुखभाजौ	हे सुखभाज.

विराज् विश्वराज् सम्राज् और देवराज् आदि राजभागान्त शब्दोंके सिवाय भिषज् ऋत्विज् वलिभुज् भूभुज् हुतभुज् गुणभाज् अश्वयुज् आदि समस्त जकारान्त शब्दोंके रूप इसीप्रकार जानने।

राज्भागान्त पुंल्लिंग सम्राज् शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	सम्राट्, सम्राड्	सम्राजौ	सम्राजः
द्वि०	सम्राज	सम्राजौ	सम्राज
तृ०	सम्राजा	सम्राड्भ्यां	सम्राड्भिः
च०	सम्राजे	सम्राड्भ्या	सम्राड्भ्य
प०	सम्राजः	सम्राड्भ्यां	सम्राड्भ्य
ष०	सम्राज.	सम्राजोः	सम्राजाम्
स०	सम्राजि	सम्राजोः	सम्राट्सु सम्राट्त्सु
सं०	हे सम्राट्, सम्राड्	हे सम्राजौ	हे सम्राजः

इसी प्रकार विराज् आदि समस्त राजभागान्त शब्दोंके रूप जानने।

अत् भागान्त (शतृ) पुंल्लिंग पतत् शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	पतन्	पतन्तौ	पतन्त

द्वि०	पतन्तम्	पतन्तौ	पततः
तृ०	पतता	पतद्भ्याम्	पतद्भिः
च०	पतते	पतद्भ्याम्	पतद्भ्यः
पं०	पततः	पतद्भ्याम्	पतद्भ्यः
ष०	पततः	पततोः	पतताम्
स०	पतति	पततोः	पतत्सु
सं०	हे पतन्	हे पतन्तौ	हे पतन्तः

मत्‌भागान्त-श्रीमत्, वत्‌भागान्त – गुणवत् उक्तवत् युष्मदर्थ-भवत् ये शब्द प्रथमाके एकवचनमें श्रीमान्, गुणवान्, उक्तवान् भवान् इस प्रकार होंगे । और अन्य अन्य विभक्तियोंमें पतत् शब्दकी तरह होंगे । शतृ प्रत्ययान्त भवत् शब्दके रूप ठीक पतत् शब्दकी तरह होंगे ।

तकारान्त पुंलिंग महत् शब्दके रूप ।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	महान्	महान्तौ	महान्तः
द्वि०	महान्तम्	महान्तौ	

अन्यान्य विभक्तियोंमें पतत् शब्दकी तरह जानना ।

---

(१) जहां सादृश्यार्थमें वत् प्रत्यय होकर जलवत् विषवत् अमृतवत् अर्कबिम्बवत् आदि शब्द बनते हैं सो नहिं लेने ।

तकारान्त पुलिंग तनुभृत् शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	तनुभृत् तनुभृद्	तनुभृतौ	तनुभृत
द्वि०	तनुभृतम्	तनुभृतौ	तनुभृत:
तृ०	तनुभृता	तनुभृद्भ्यां	तनुभृद्भिः
च०	तनुभृते	तनुभृद्भ्यां	तनुभृद्भ्यः
प०	तनुभृतः	तनुभृद्भ्यां	तनुभृद्भ्य
ष०	तनुभृतः	तनुभृतो.	तनुभृताम्
स०	तनुभृति	तनुभृतो.	तनुभृत्सु
स०	हे तनुभृत,तनुभृद्	हे तनुभृतौ	हे तनुभृत.

इसीप्रकार भूभृत् काव्यकृत् कर्मकृत गिरिभृत् वत्राहत् अनुस्रव् महीभृत् निपश्चित् परभृत् तनूनपात् वृहत् इत्यादि तथा अभ्यस्त-धातुके अन्तर शत् प्रत्यय होकर ददत् जाग्रत् शासत् दधत् परि-लेलिहत् आदि जितने अत्प्रत्यान्त शब्द बनते हैं, उन सबके रूप जानने।

दकारान्त पुल्लिंग तत्त्वविद् शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	तत्त्वविद्, तत्त्वविद्	तत्त्वविदौ	तत्त्वविद:
द्वि०	तत्त्वविदम्	तत्त्वविदौ	तत्त्वविदः
तृ०	तत्त्वविदा	तत्त्वविद्भ्यां	तत्त्वविद्भिः
च०	तत्त्वविदे	तत्त्वविद्भ्यां	तत्त्वविद्भ्यः
प०	तत्त्वविदः	तत्त्वविद्भ्यां	तत्त्वविद्भ्यः

ष०	तत्वविदः	तत्वविदोः	तत्वविदाम्
स०	तत्वविदि	तत्वविदो॰	तत्ववित्सु
स०	हे तत्ववित्, तत्वविद्	हे तत्वविदौ	हे तत्वविदः

इसीप्रकार शास्त्रविद् उद्भिद् दिविषद् सभासद् सुहृद् दुर्हृद् प्रभृति शब्दोंके रूप जानने।

अन्भागान्त पुंलिंग प्रेमन्शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	प्रेमा	प्रेमाणौ	प्रेमाणः
द्वि०	प्रेमाणम्	प्रेमाणौ	प्रेम्णः
तृ०	प्रेम्णा	प्रेमभ्यां	प्रेमभिः
च०	प्रेम्णे	प्रेमभ्याम्	प्रेमभ्यः
पं०	प्रेम्णः	प्रेमभ्यां	प्रेमभ्यः
ष०	प्रेम्णः	प्रेम्णोः	प्रेम्णाम्
स०	प्रेम्णि प्रेमणि	प्रेम्णोः	प्रेमसु
स०	हे प्रेमन्	हे प्रेमाणौ	हे प्रेमाणः

म व संयोगके पश्चात् अन्भागान्त शब्द, तथा श्वन् युवन् मघवन् और हन्भागान्त शब्द तथा पूषन् अर्यमन् इन शब्दोंको छोड़ कर शेषके समस्त अन्भागान्त शब्दोंके इसी प्रकार रूप जानना।

अन्भागान्त म संयुक्त आत्मन् शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	आत्मा	आत्मानौ	आत्मानः

द्वि०	आत्मानम्	आत्मानौ	आत्मनः
तृ०	आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभिः
च०	आत्मने	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
पं०	आत्मनः	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
ष०	आत्मनः	आत्मनोः	आत्मनाम्
स०	आत्मनि	आत्मनोः	आत्मसु
स०	हे आत्मन्	हे आत्मानौ	हे आत्मानः

व संयुक्त यज्वन् शब्द भी ठीक इसीप्रकार जानना। जैसे, यज्वा यज्वानौ यज्वानः। यज्वानं यज्वानौ यज्वनः इत्यादि। इसीप्रकार ब्रह्मन् पाप्मन् सुगजद्मन् यद्मन् द्विजन्मन् बर्हिशुष्मन् अश्मन् कृष्णवर्त्मन् पापकर्मन् बहुदृश्वन् आदि म व संयोगवाले शब्दोंके रूप जानने।

६८। शस् आदि विभक्तियोंका स्वर परे रहते श्वन् युवन् मघवन् शब्दके व के स्थानमें उ हो जाता है, और भ्याम् आदिका व्यंजन परे रहते न् का लोप हो जाता है। जैसे—

श्वन् शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	श्वा	श्वानौ	श्वानः
द्वि०	श्वानम्	श्वानौ	शुनः
तृ०	शुना	श्वभ्याम्	श्वभिः
च०	शुने	श्वभ्याम्	श्वभ्यः
प०	शुनः	श्वभ्याम्	श्वभ्यः

ष०	शुनः	शुनोः	शुनाम्
स०	शुनि	शुनोः	श्वसु
स०	हे श्वन्	हे श्वानौ	हे श्वानः

युवन् शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	युवा	युवानौ	युवानः
द्वि०	युवानम्	युवानौ	यूनः
तृ०	यूना	युवभ्यां	युवभिः
च०	यूने	युवभ्यां	युवभ्यः
प०	यूनः	युवभ्यां	युवभ्यः
ष०	यूनः	यूनोः	यूनाम्
स०	यूनि	यूनोः	युवसु
सं०	हे युवन्	हे युवानौ	हे युवानः

मघवन् शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	मघवा	मघवानौ	मघवानः
द्वि०	मघवानं	मघवानौ	मघोनः
तृ०	मघोना	मघवभ्यां	मघवभिः
च०	मघोने	मघवभ्यां	मघवभ्यः
पं०	मघोनः	मघवभ्यां	मघवभ्यः
ष०	मघोनः	मघोनोः	मघोनाम्

ष०	मघोनि	मघोनो.	मघवसु
सं०	हे मघवन्	हे मघवानौ	हे मघवानः

मस्महन् शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	ब्रह्महा	ब्रह्महणौ	ब्रह्महणः
द्वि०	ब्रह्महणं	ब्रह्महणौ	ब्रह्मघ्नः
तृ०	ब्रह्मघ्ना	ब्रह्महभ्यां	ब्रह्महभिः
च०	ब्रह्मघ्ने	ब्रह्महभ्यां	ब्रह्महभ्यः
पं०	ब्रह्मघ्नः	ब्रह्महभ्यां	ब्रह्महभ्यः
ष०	ब्रह्मघ्नः	ब्रह्मघ्नोः	ब्रह्मघ्नाम्
स०	ब्रह्मघ्नि, ब्रह्महणि	ब्रह्मघ्नोः	ब्रह्महसु
सं०	हे ब्रह्महन्	हे ब्रह्महणौ	हे ब्रह्महणः

इसीप्रकार भ्रूणहन् वृत्रहन् आत्महन् आदि शब्दोंके रूप जानने।

इन् भागान्त धनिन् शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	धनी	धनिनौ	धनिनः
द्वि०	धनिनं	धनिनौ	धनिनः
तृ०	धनिना	धनिभ्यां	धनिभिः
च०	धनिने	धनिभ्यां	धनिभ्यः
पं०	धनिनः	धनिभ्यां	धनिभ्यः
ष०	धनिनः	धनिनोः	धनिनाम्

स०	धनिनि	धनिनोः	धनिषु
सं०	हे धनिन्	हे धनिनौ	हे धनिनः

इसीप्रकार करिन् ज्ञानिन् मानिन् पयस्विन् विवादिन् दण्डिन् हस्तिन् गोमिन् आदि इन् भागान्त शब्दोंके रूप जानने ।

शकारान्त पुंलिंग तनुस्पृश् शब्दके रूप ।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	तनुस्पृक्, तनुस्पृग्	तनुस्पृशौ	तनुस्पृशः
द्वि०	तनुस्पृशं	तनुस्पृशौ	तनुस्पृशः
तृ०	तनुस्पृशा	तनुस्पृग्भ्यां	तनुस्पृग्भिः
च०	तनुस्पृशे	तनुस्पृग्भ्यां	तनुस्पृग्भ्यः
पं०	तनुस्पृशः	तनुस्पृग्भ्यां	तनुस्पृग्भ्यः
ष०	तनुस्पृशः	तनुस्पृशोः	तनुस्पृशाम्
स०	तनुस्पृशि	तनुस्पृशोः	तनुस्पृक्षु
सं०	हे तनुस्पृक्, हे तनुस्पृग्	हे तनुस्पृशौ	हे तनुस्पृशः

इसीप्रकार ईदृश् कीदृश् तादृश् भवादृश् एतादृश् अन्यादृश् यादृश् प्रभृति शब्दोंके रूप जानना ।

अस् भागान्त वेधस् शब्दके रूप ।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	वेधा	वेधसौ	वेधसः
द्वि०	वेधसं	वेधसौ	वेधसः
तृ०	वेधसा	वेधोभ्यां	वेधोभिः

च०	वेधसे	वेधोभ्यां	वेधोभ्यः
प०	वेधसः	वेधोभ्यां	वेधोभ्यः
ष०	वेधस	वेधसोः	वेधसाम्
स०	वेधसि	वेधसो.	वेध सु
सं०	हे वेध.	हे वेधसौ	हे वेधसः

इसीप्रकार पुरोधस् अन्यमनस् विचेतस् पीतपयस् प्रभृति अस्‌भागान्त शब्दोंके रूप जानने। किन्तु अन्यमनस् आदि विशेषणरूप अस् भागान्त शब्दके पुलिङ्ग वा स्त्रीलिङ्गमें एकसेही रूप होते हैं।

श्रेयस् शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	श्रेयान्	श्रेयासौ	श्रेयांसः
द्वि०	श्रेयासम्	श्रेयांसौ	

अन्यान्य विभक्तियोंमें वेधस् शब्दवत् जानना।

क्वसु प्रत्ययान्त विद्वस्* शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांस.

* इस सहित वर्तमान क्वसु प्रत्यया त शब्द ठीक विद्वस् शब्दकी तरह हैं। केवल मात्र द्वितीयाके बहुवचन विभक्तिके परे रहते हैं और व के स्थानमें उ हो जाता है जैसे पेचिवस् शब्द। पेचिवान्। पेचिवांसौ। पेचिवांस। पेचिवांसं। पेचिवांसौ। पेचुषः, इत्यादि।

स०	धनिनि	धनिनोः	धनिषु
सं०	हे धनिन्	हे धनिनौ	हे धनिनः

इसीप्रकार करिन् ज्ञानिन् मानिन् पयस्विन् विवादिन् दण्डिन् हस्तिन् गोमिन् आदि इन् भागान्त शब्दोंके रूप जानने ।

शकारान्त पुल्लिंग तनुस्पृश् शब्दके रूप ।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	तनुस्पृक्, तनुस्पृग्	तनुस्पृशौ	तनुस्पृशः
द्वि०	तनुस्पृश	तनुस्पृशौ	तनुस्पृशः
तृ०	तनुस्पृशा	तनुस्पृग्भ्या	तनुस्पृग्भिः
च०	तनुस्पृशे	तनुस्पृग्भ्यां	तनुस्पृग्भ्यः
प०	तनुस्पृशः	तनुस्पृग्भ्यां	तनुस्पृग्भ्यः
ष०	तनुस्पृश.	तनुस्पृशोः	तनुस्पृशाम्
स०	तनुस्पृशि	तनुस्पृशोः	तनुस्पृक्षु
सं०	हे तनुस्पृक्, हे तनुस्पृग्	हे तनुस्पृशौ	हे तनुस्पृशः

इसीप्रकार ईदृश् कीदृश् तादृश् भवादृश् एतादृश् अन्यादृश् यादृश् प्रभृति शब्दोंके रूप जानना ।

अस् भागान्त वेधस् शब्दके रूप ।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	वेधा.	वेधसौ	वेधसः
द्वि०	वेधसं	वेधसौ	वेधस
तृ०	वेधसा	वेधोभ्यां	वेधोभिः

च०	वेधसे	वेधोभ्या	वेधोभ्य
पं०	वेधसः	वेधोभ्या	वेधोभ्यः
ष०	वेधस'	वेधसोः	वेधसाम्
स०	वेधसि	वेधसोः	वेध'सु
स०	हे वेध.	हे वेधसौ	हे वेधस'

इसीप्रकार पुरोधस् अन्यमनस् विचेतस् पीतपयस् प्रभृति अस्भागान्त शब्दोंके रूप जानने। किन्तु अन्यमनस् आदि विशेषणरूप अस् भागान्त शब्दके पुलिङ्ग वा स्त्रीलिङ्गमें एकमेही रूप होते हैं।

श्रेयस् शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	श्रेयान्	श्रेयासौ	श्रेयांसः
द्वि०	श्रेयासम्	श्रेयासौ	

अन्यान्य विभक्तियोंमें वेधस् शब्दवत् जानना।

क्वसु प्रत्ययान्त विद्वस्* शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः

* इस् सहित वर्तमान क्वसु प्रत्ययान्त शब्द ठीक विद्वस् शब्दकी तरह हैं। केवल मात्र द्वितीयाके बहुवचन विभक्तिके परे रहते हैं और व के स्थानमें उ हो जाता है जैसे पेचिवस् शब्द। पेचिवान्। पेचिवांसौ। पेचिवांस। पेचिवांस। पेचिवांसौ। पेचुषः, इत्यादि।

द्वि०	विद्वांसम्	विद्वांसौ	विदुषः
तृ०	विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भिः
च०	विदुषे	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
पं०	विदुषः	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
ष०	विदुषः	विदुषोः	विदुषाम्
स०	विदुषि	विदुषोः	विद्वत्सु
सं०	हे विद्वन्	हे विद्वांसौ	हे विद्वांसः

इसीप्रकार समस्त क्वसु प्रत्ययान्त शब्दोंके रूप जानने।

सकारान्त पुम्स् शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	पुमान्	पुमांसौ	पुमांसः
द्वि०	पुमांसम्	पुमांसौ	पुंसः
तृ०	पुंसा	पुम्भ्याम्	पुम्भिः
च०	पुंसे	पुम्भ्याम्	पुम्भ्यः
पं०	पुंसः	पुम्भ्याम्	पुम्भ्यः
ष०	पुंसः	पुंसोः	पुंसाम्
स०	पुंसि	पुंसोः	पुंसु
सं०	हे पुमन्	हे पुमांसौ	हे पुमांसः

हकारान्त पुलिंग कामदुह् शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	कामधुक् कामधुग्	कामदुहौ	कामदुहः

द्वि०	कामदुह	कामदुहौ	कामदुह
तृ०	कामदुहा	कामधुग्भ्या	कामधुग्भि
च०	कामदुहे	कामधुग्भ्यां	कामधुग्भ्य
प०	कामदुह	कामधुग्भ्यां	कामधुग्भ्य'
ष०	कामदुह॰	कामदुहोः	कामदुहाम्
स०	कामदुहि	कामदुहो	कामधुक्षु
सं०	हे कामधुक्, हे कामधुग्	हे कामदुहौ	हे कामदुह'

इसी प्रकार नरधुह, काष्ठदह, आदिक शब्द जानने । जैसे, नरधुक, नरधुग्भ्या नरधुक्षु । काष्ठधक् काष्ठधग्भ्या काष्ठधक्षु इत्यादि ।

पुष्पलिह् शब्दके रूप ।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	पुष्पलिट् पुष्पलिड्	पुष्पलिहौ	पुष्पलिह॰
द्वि०	पुष्पलिह	पुष्पलिहौ	पुष्पलिह॰
तृ०	पुष्पलिहा	पुष्पलिड्भ्या	पुष्पलिड्भि
च०	पुष्पलिहे	पुष्पलिड्भ्या	पुष्पलिड्भ्य
पं०	पुष्पलिह	पुष्पलिड्भ्या	पुष्पलिड्भ्य
ष०	पुष्पलिहः	पुष्पलिहो	पुष्पलिहाम्
स०	पुष्पलिहि'	पुष्पलिहोः	पुष्पलिट्सु पुष्पलिट्त्सु
सं०	हे पुष्पलिट्	हे पुष्पलिट् हे पुष्पलिहौ	हे पुष्पलिह

इसीप्रकार मधुलिह् तुरासाह् दुःखसाह् हव्यवाह् आदिक शब्दोंके रूप जानने ।

व्यंजनांत स्त्रीलिंग शब्दोंके रूप।

—:o:—

९९। चकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द ठीक जलमुच् शब्दवत् जानना। जैसे—वाच्—वाक् वाचौ वाग्भ्यां वाक्षु इत्यादि। इसीप्रकार स्रुच् शुच् त्वच् और रुच् आदिक शब्द जानने।

१००। जकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द ठीक सुखभाज् शब्दकी तरह जानने। जैसे स्रज्—स्रक् स्रजौ स्रग्भ्यां स्रक्षु इत्यादि इसी प्रकार रुज् आदिक शब्द भी जानने।

१०१। तकारान्त स्त्रीलिंग शब्द ठीक तनुभृत् शब्दकी तरह जानना। जैसे—पापकृत् पापकृतौ इत्यादि। इसीप्रकार सरित् योषित् तड़ित् विद्युत् क्षुत् आदि शब्द जानने।

१०२। दकारान्त स्त्रीलिंग शब्द तत्त्वविद् शब्दकी तरह जानने। जैसे आपद्—आपत् आपदौ आपत्सु इत्यादि। इसी प्रकार विपद् मृद् मुद् सम्पद् शरद् दृषद् प्रतिपद् शब्दोंके रूप जानने।

१०३। सि, भ्याम्, भिस्, भ्यस् और सुप् विभक्तिके परें रहते धकारान्त स्त्रीलिंग शब्दोंके ध् के स्थानमें त् हो जाता है। जैसे—वीरुध्—वीरुत्। वीरुधौ वीरुद्भ्याम् वीरुत्सु। क्षुध्—क्षुत् क्षुधौ क्षुधः क्षुद्भ्यां क्षुत्सु। इत्यादि। इसी प्रकार समिध् युध् आदिक शब्द भी जानने।

१०४। सि, भ्याम्, भिस्, भ्यस् सुप् विभक्तिके परें रहते भकारान्त स्त्रीलिंग शब्दोंके भ् के स्थानमें प् हो जाता है। जैसे—

ककुभ्-ककुप् ककुभौ ककुप्सु। इत्यादि। इसी प्रकार अनुष्टुभ् त्रिष्टुभ् आदि शब्द जानने।

रकारान्त स्त्रीलिंग गिर् शब्द।

गी गिरौ गिर। गीर्भ्यां गीर्षु। इसीप्रकार पुर् शब्द-पूः पुरौ पुरः पूर्भ्यां पूर्षु। इसी प्रकार धुर् शब्द जानना। द्वार् शब्दमें केवल मात्र विभक्तियोंका योग करना। जैसें—द्वा द्वारौ द्वार इत्यादि।

पकारान्त अप् शब्द बहुवचनान्त।

आप अपः अद्भिः अद्भ्यः अद्भ्यः अपां अप्सु हे आपः

१०५। शकारान्त स्त्रीलिंग दश् दिश् आदिक शब्द पुलिंग तनुस्पृश् शब्दकी तरह जानना।

सकारान्त स्त्रीलिंग आशिस्शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	आशीः	आशिषौ	आशिषः
द्वि०	आशिषम्	आशिषौ	आशिषः
तृ०	आशिषा	आशीर्भ्याम्	आशीर्भिः

इत्यादि। सप्तमीके बहुवचनमें आशीःषु बनता है।

१०६। सान्त स्त्रीलिंग शब्दोंमें अप्सरस्, विमनस् और जलौकस् ये तीन शब्द नित्य बहुवचनान्त होते हैं। अन्य सकारान्त शब्द यदि विशेषण होते हैं तो वेधस् शब्दकी तरह होंगे, जैसें,—

स्निग्ह-स्निग्धाः स्निग्धौ स्निग्धः इत्यादि। प्रयोग जैसे स्निग्धाः भोगाः।

वकारान्त स्त्रीलिंग दिव् शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	द्यौ	दिवौ	दिवः
द्वि०	द्याम्, दिवम्	दिवौ	दिवः
तृ०	दिवा	द्युभ्याम्	द्युभिः
च०	दिवे	द्युभ्याम्	द्युभ्यः
पं०	दिवः	द्युभ्याम्	द्युभ्यः
ष०	दिवः	दिवोः	दिवाम्
स०	दिवि	दिवोः	द्युषु
सं०	हे द्यौः	हे दिवौ	हे दिवः

हकारान्त स्त्रीलिंग उपानह् शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	उपानत्, उपानद्	उपानहौ	उपानहः
द्वि०	उपानहम्	उपानहौ	उपानहः
तृ०	उपानहा	उपानद्भ्याम्	उपानद्भिः
च०	उपानहे	उपानद्भ्याम्	उपानद्भ्यः
पं०	उपानहः	उपानद्भ्याम्	उपानद्भ्यः
ष०	उपानहः	उपानहोः	उपानहाम्
स०	उपानहि	उपानहोः	उपानत्सु
सं०	हे उपानत्, उपानद्	हे उपानहौ	हे उपानहः

व्यञ्जनान्त नपुंसकलिंग शब्दोंके रूप।

—— ० ——

१०७। व्यञ्जनान्त नपुंसक लिंग शब्दोंके परे रहते सि, अम् विभक्तिका लोप हो जाता है और औ को ई हो जाता है। जैसे, पतत् + सि = पतत्। पतत् + अम् = पतत्। पतत् + औ = पतती।

१०८। नपुंसकलिंग शब्दोंसे परे जस् शस् विभक्तिको इ हो जाता है। ङ् ञ् ण् न् म् के सिवाय जो वर्गीय अक्षर अन्तमें रहैगा, उससे पहिले जस् शस् के परे रहते उसीवर्गका पंचम अक्षर हो जायगा। जैसे, प्राच् + जस् = प्राञ्चि। रत्नभाज् + शस् = रत्नभाञ्जि। श्रीमत् + जस् = श्रीमन्ति इत्यादि।

महत्शब्द—महत् महती महान्ति। द्वितीयामें भी इसीप्रकार तथा तृतीयादिके पुल्लिंगवत् जानना।

१०९। इस् उस् ऋश्भागान्त नपुंसकलिंग शब्द अस् शस् के परे रहते ईंषि ऊंषि ऋंशि और अस् भागान्तशब्द आंसि हो जाता है।* जैसे—हविस्—हवींषि। वपुस्—वपूंषि। तादृश्—तादृंशि। चेतस्—चेतांसि। इत्यादिक।

सकारान्त नपुंसकलिंग हविस् शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	हविः	हविषी	हवींषि
द्वि०	हविः	हविषी	हवींषि

* ये तीन केवल साधारण नियम लिये गये हैं।

तृ०	हविषा	हविर्भ्याम्	हविर्भिः
च०	हविषे	हविर्भ्याम्	हविर्भ्यः
प०	हविषः	हविर्भ्याम्	हविर्भ्यः
ष०	हविषः	हविषो	हविषाम्
स०	हविषि	हविषो.	हविःषु
सं०	हे हविः	हे हविषी	हे हवींषि ।

सकारान्त वपुस् शब्दके रूप ।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	वपुः	वपुषी	वपूंषि
द्वि०	वपु	वपुषी	वपूंषि

अन्यान्य विभक्तियोंमें हविस् शब्दवत् जानना । केवल मात्र इ और उ का भेद है । जैसे—हविर्भ्यां वपुर्भ्यां । हविःषु, वपुःषु । इसीप्रकार आयुस् धनुस् चक्षुस् यजुस् आदिक समस्त उस्भागान्त शब्द वपुस् शब्दकी तरह जानना ।*

शकारान्त नपुंसकलिंग तादृश् शब्दके रूप ।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	तादृक्	तादृशी	तादृंशि
द्वि०	तादृक्	तादृशी	तादृंशि

अन्यान्य विभक्तियोंमें पुलिंग तनुस्पृश् शब्दकी तरह जानना ।

* समास होने पर उस् भागान्त शब्द तीनों लिंगोंमें होते हैं । जैसे,- गृहीतधनु गृहीतधनुषी गृहीतधनुंषि । किन्तु इस अवस्थामें पुलिंग स्त्रीलिंग में पृथक्से रूप बनते हैं ।

सकारान्त नपुंसकलिंग चेतस् शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	चेतः	चेतसी	चेतांसि
द्वि०	चेतः	चेतसी	चेतांसि

अन्यान्य विभक्तियोंमें वेधस् शब्दकी तरह जानना। इसी प्रकार पयस् अम्भस् सरस् रक्षस् उरस् वयस् वासस् अगस् तमस् छन्दस् मनस् यशस् रजस् वक्षस् आदि शब्दोंके रूप भी जानना। इन सब शब्दोंमें सम्बोधन प्रथमा विभक्तिकी तरह ही होता है।

नकारान्त नपुंसकलिंग नामन् शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	नाम	नाम्नी नामनी	नामानि
द्वि०	नाम	नाम्नी नामनी	नामानि
स०	हे नाम हे नामन्	नाम्नी नामनी	नामानि

और २ विभक्तियोंमें पुलिंग प्रेमन् शब्दवत् जानना।

इसी प्रकार व्योमन् दामन् हेमन् प्रेमन्* आदिक शब्दोंके रूप जानना।

चकारान्त अवाच् शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	अवाक्	अवाची	अवाञ्चि
द्वि०	अवाक्	अवाची	अवाञ्चि

अन्यान्य विभक्तियोंमें वाच् या जलमुच् शब्दवत् जानना।

* प्रेमन् शब्द पुलिंग नपुंसक लिंग दोनोंमें ही होता है।

तकारान्त गुणवत् शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	गुणवत् गुणवद्	गुणवती	गुणवन्ति
द्वि०	गुणवत् ,,	गुणवती	गुणवन्ति
स०	,, ,,	,,	,,

अन्यान्य विभक्तियोंमें पुंलिंग पतत् शब्दवत् जानना।

तकारान्त अभ्यस्त जाग्रत् शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	जाग्रत्,जाग्रद्	जाग्रती	जाग्रन्ति, जाग्रति
द्वि०	जाग्रत् ,,	जाग्रती	जाग्रन्ति, जाग्रति

अन्यान्य विभक्तियोंमें पतत् शब्दवत् जानना।

नकारान्त कर्मन् शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	कर्म	कर्मणी	कर्माणि
द्वि०	कर्म	कर्मणी	कर्माणि
सं०	हे कर्म, हे कर्मन्	हे ,,	हे ,,

अन्यान्य विभक्तियोंमें पुंलिंग आत्मन् शब्दवत् जानना। इसी प्रकार चर्मन्, वर्मन्, शर्मन्, नर्मन्, जन्मन्, भस्मन्, सद्मन्, वर्त्मन्, पर्वन् छद्मन्, सुकन्, आदि शब्दोंके रूप भी जानने।

नकारान्त अहन् शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	अहः	अह्नी, अहनी	अहानि
द्वि०	अहः	अह्नी, अहनी	अहानि
तृ०	अह्ना	अहोभ्याम्	अहोभिः
च०	अह्ने	अहोभ्याम्	अहोभ्यः
पं०	अह्नः	अहोभ्याम्	अहोभ्यः
ष०	अह्नः	अह्नोः	अह्नाम्
स०	अह्नि, अहनि	अह्नोः	अहःसु
सं०	हे अहः	हे अह्नी, अहनी	हे अहानि॥

११० । नपुंसकलिंगमें इन् भागान्त शब्दोंके न्कार लोप होकर वारि शब्दकी तरह रूप बनते हैं केवल मात्र षष्ठीके बहुवचनमें इकारको दीर्घ नहीं होता । जैसे—

रागिन् शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	रागि	रागिणी	रागीणि
द्वि०	रागि	रागिणी	रागीणि
तृ०	रागिणा	रागिभ्याम्	रागिभिः

इत्यादि वारि शब्दकी तरह जानना किन्तु सम्बोधनमें हे रागि हे रागिन् दो रूप बनेंगे। मनः चित्त इत्यादि पदोंके विशेषण होनेपर इन् भागान्त शब्द नपुंसकलिंग होते हैं।

नपुंसकलिंग सर्व शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
द्वि०	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि

और विभक्तियोंमें पुंलिग सर्व शब्दवत् जानना।

अकारान्त पुंलिग पूर्व शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	पूर्वः	पूर्वौ	पूर्वे, पूर्वाः
द्वि०	पूर्वं	पूर्वौ	पूर्वान्
तृ०	पूर्वेण	पूर्वाभ्याम्	पूर्वैः
च०	पूर्वस्मै	पूर्वाभ्याम्	पूर्वेभ्यः
पं०	पूर्वस्मात् पूर्वात्	पूर्वाभ्याम्	पूर्वेभ्यः
ष०	पूर्वस्य	पूर्वयोः	पूर्वेषाम्
स०	पूर्वस्मिन्, पूर्वे	पूर्वयोः	पूर्वेषु
स०	हे पूर्व	हे पूर्वौ	हे पूर्वे हे पूर्वाः

आकारान्त स्त्रीलिंग पूर्वा शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	पूर्वा	पूर्वे	पूर्वाः
द्वि०	पूर्वाम्	पूर्वे	पूर्वाः
तृ०	पूर्वया	पूर्वाभ्याम्	पूर्वाभिः
च०	पूर्वस्यै	पूर्वाभ्याम्	पूर्वाभ्यः

प०	पूर्वस्याः	पूर्वाभ्याम्	पूर्वाभ्य
ष०	पूर्वस्याः	पूर्वयो॰	पूर्वासाम्
स०	पूर्वस्याम्	पूर्वयो	पूर्वासु
सं०	हे पूर्वे	हे पूर्वे	हे पूर्वाः

अकारान्त नपुंसकलिंग पूर्व शब्दके रूप ।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	पूर्वम्	पूर्वे	पूर्वाणि
द्वि०	पूर्वम्	पूर्वे	पूर्वाणि
स०	हे पूर्व	हे पूर्वे	हे पूर्वाणि

और २ विभक्तियोंमें पुलिंगवत् जानना ।

११६ । तद् और एतद् शब्दको प्रथमाके एकवचन पुलिंगमें स और एष हो जाता है । और समस्त विभक्तियोंमें तदादि दकारान्त शब्दोंके द् का लोप होकर सर्व शब्दवत् रूप बनते हैं ।

पुलिंग तद् शब्दके रूप ।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	सः	तौ	ते
द्वि०	त	तौ	तान्
तृ०	तेन	ताभ्याम्	तैः
च०	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
प०	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्य॰

(१) तदादिक शब्दोंमें सम्बोधन नहिं हो सक्ता।

ष०	तस्य	तयोः	तेषां
स०	तस्मिन्	तयो	तेषु

स्त्रीलिंगमें तद् शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	सा	ते	ताः
द्वि०	ताम्	ते	ताः
तृ०	तया	ताभ्याम्	ताभिः
च०	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
प्र०	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
ष०	तस्याः	तयोः	तासाम्
स०	तस्याम्	तयोः	तासु

नपुंसकलिंगमें तद् शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	तत, तद्	ते	तानि
द्वि०	तत, तद्	ते	तानि

अन्यान्य विभक्तियोंमें पुंलिंग सर्व शब्दवत् जानना।

एतद् शब्द ठीक तद् शब्दकी तरह जानना। जैसे, एषः एतौ एते। स्त्री०—एषा एते एताः। नपुंसक-एतत, एतद्, एते एतानि इत्यादि। किन्तु कभी २ द्वितीया विभक्तिके तीनों वचनोंमें तथा टा और ओस् विभक्तिके परे रहते एतद् शब्दको एन आदेश हो जाता है।

पुंलिंग यद् शब्दके रूप ।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	यः	यौ	ये
द्वि०	यं	यौ	यान्
तृ०	येन	याभ्याम्	यैः
च०	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
प०	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः
ष०	यस्य	ययोः	येषाम्
स०	यस्मिन्	ययोः	येषु

स्त्रीलिंग यद् शब्दके रूप ।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	या	ये	याः
द्वि०	याम्	ये	याः
तृ०	यया	याभ्याम्	याभिः
च०	यस्यै	याभ्याम्	याभ्यः
प०	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
ष०	यस्याः	ययोः	यासाम्
स०	यस्याम्	ययोः	यासु

नपुंसकलिंगमें यद् शब्दके रूप ।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	यत्, यद्	ये	यानि
द्वि०	यत्, यद्	ये	यानि

अन्यान्य विभक्तियोंमें पुंलिंगवत् जानना ।

मकारान्त पुंलिंग किम् शब्दके रूप ।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	कः	कौ	के
द्वि०	कम्	कौ	कान्
तृ०	केन	काभ्याम्	कैः
च०	कस्मै	काभ्यां	केभ्यः
पं०	कस्मात्	काभ्यां	केभ्यः
ष०	कस्य	कयोः	केषाम्
स०	कस्मिन्	कयोः	केषु

स्त्रीलिंगमें किम् शब्दके रूप ।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	का	के	काः
द्वि०	कां	के	का
तृ०	कया	काभ्यां	काभि

इत्यादि, शेष स्त्रीलिंग यद् शब्दवत् जानना—

नपुंसकलिंगमें किम् शब्दके रूप ।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	किम्	के	कानि
द्वि०	किम्	के	कानि

और और विभक्तियोंमें पुंलिंगवत् जानना ।

पुंलिंगमें इदम् शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	अयम्	इमौ	इमे
द्वि०	इमम्, एनम्	इमौ, एनौ	इमान्, एनान्
तृ०	अनेन, एनेन	आभ्या	एभि
च०	अस्मै	"	एभ्य
प०	अस्मात्	"	"
ष०	अस्य	अनयो एनयो	एषाम्
स०	अस्मिन्	" "	एषु

स्त्रीलिंगमें इदम् शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	इयम्	इमे	इमा
द्वि०	इमाम्, एनाम्	इमे, एने	इमा, एना
तृ०	अनया, एनया	आभ्या	आभि
च०	अस्यै	"	आभ्य
प०	अस्या	"	"
ष०	अस्याः	अनयो, एनयो	आसाम्
स०	अस्याम्	" "	आसु

नपुंसकलिंगमें इदम् शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	इदम्	इमे	इमानि
द्वि०	इदम्	इमे	इमानि

अन्यान्य विभक्तियोंमें पुंलिंगवत् जानना।

पुंल्लिंगमें अदस् शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	असौ	अमू	अमी
द्वि०	अमुम्	अमू	अमून्
तृ०	अमुना	अमूभ्यां	अमीभिः
च०	अमुष्मै	अमूभ्यां	अमीभ्यः
पं०	अमुष्मात्	"	"
ष०	अमुष्य	अमुयो	अमीषाम्
स०	अमुष्मिन्	"	अमीषु

स्त्रीलिंगमें अदस् शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	असौ	अमू	अमूः
द्वि०	अमूम्	अमू	अमूः
तृ०	अमुया	अमूभ्याम्	अमूभिः
च०	अमुष्यै	"	अमूभ्यः
पं०	अमुष्याः	"	"
ष०	अमुष्याः	अमुयोः	अमूषाम्
स०	अमुष्याम्	अमुयोः	अमूषु

नपुंसकलिंगमें अदस् शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	अदः	अमू	अमूनि
द्वि०	अदः	अमू	अमूनि

अन्यान्य विभक्तियोंमें पुंलिंगवत् जानना।

अलिंग युष्मद् (तुम) शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वि०	त्वाम् त्वा	युवाम, वा	युष्मान्, वः
तृ०	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
च०	तुभ्य, ते	युवाभ्या, वा	युष्मभ्य, वः
प०	त्वत्	युवाभ्यां	युष्मत्
ष०	तव, ते	युवयोः, वां	युष्माकम्, वः
स०	त्वयि	युवयो	युष्मासु

अलिंग अस्मद् (मैं) शब्दके रूप।

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वि०	मां, मा	आवा, नौ,	अस्मान, नः
तृ०	मया	आवाभ्या	अस्माभिः
च०	मह्यम,मे	आवाभ्या, नौ	अस्मभ्य, नः
प०	मत्	आवाभ्यां	अस्मत्
ष०	मम, मे	आवयो., नौ	अस्माकम्, नः
स०	मयि	आवयोः	अस्मासु।

ये दोनों शब्द तीनों लिंगमें एकसे होते हैं, इसी कारण इन को अलिंग कहते हैं। इनमें त्वा, मा ते, मे, वाम्, नौ, वः, नः ये विशेष पद श्लोक व वाक्यकी आदिमें कदापि नहीं आते, जैसे,–

'मम धनम्' इस जगह 'मे धनम्' ऐसा कदापि नहीं करना किन्तु 'धनं मे' इस प्रकार करना चाहिये। तथा च वा ह अ एव इन पांच अव्ययोंके योगमें भी उक्त विशेष पद नहीं आते। जैसे—पिता त्वां मां च नित्यमुपदिशति। यहापर 'त्वा मा च' ऐसा प्रयोग नहीं हो सका है।

संख्यावाचक शब्द।

एक शब्द एकवचनान्त होता है किन्तु 'कोई कोई' इस अर्थमें बहुवचनान्त भी होता है। यह तीनों लिंगमे सर्व शब्दकी सदृश होता है। यथा, एकः वृक्षः = एक वृक्ष। एके पण्डिताः = कोई कोई पंडित जन। इत्यादि।

द्वि शब्द द्विवचनात–पुल्लिंग।

प्र०	द्वि०	तृ०	च०	पं०	ष०	स०
द्वौ	द्वौ	द्वाभ्यां	द्वाभ्याम्	द्वाभ्यां	द्वयोः	द्वयोः।

स्त्रीलिंगमें।

प्र०	द्वि०	तृ०	च०	पं०	ष०	स०
द्वे	द्वे	द्वाभ्यां	द्वाभ्या	द्वाभ्यां	द्वयोः	द्वयोः

नपुंसकलिंगमें।

द्वे द्वे इत्यादि पुल्लिंगवत् जानना।

त्रि[1] शब्द पुल्लिंगमें।

प्र०	द्वि०	तृ०	च०	पं०	ष०	स०
त्रयः	त्रीन्	त्रिभिः	त्रिभ्य	त्रिभ्यः	त्रयाणां	त्रिषु

(१) त्रि शब्दसे लेकर अष्टादशन् शब्दपर्यंत सब शब्द बहुवचनात होते हैं। और तिसृ चतसृ शब्दके ऋकारको दीर्घ नहीं होता।

स्त्रीलिंगमें ।

प्र०	द्वि०	तृ०	च०	प०	ष०	स०
तिस्रः	तिस्रः	तिसृभिः	तिसृभ्यः	तिसृभ्यः	तिसृणाम्	तिसृषु

नपुंसकलिंगमें

त्रीणि त्रीणि, शेषके पुल्लिंगवत् जानना ।

चतुर् शब्दके रूप पुल्लिंगमें ।

प्र०	द्वि०	तृ०	च०	प०	ष०	स०
चत्वारः	चतुरः	चतुर्भिः	चतुर्भ्यः	चतुर्भ्यः	चतुर्णाम्	चतुर्षु

स्त्रीलिंगमें ।

प्र०	द्वि०	तृ०	च०	प०	ष०	स०
चतस्रः	चतस्रः	चतसृभिः	चतसृभ्यः	चतसृभ्यः	चतसृणाम्	चतसृषु

नपुंसकलिंगमें ।

चत्वारि चत्वारि । शेषके रूप पुल्लिंगवत् जानने ।

पञ्चन् शब्दके रूप ।

पञ्च पञ्च पञ्चभिः पञ्चभ्यः पञ्चभ्यः पञ्चानाम् पञ्चसु ।

षष् शब्दके रूप ।

षट् षट् षड्भिः षड्भ्यः षड्भ्यः षण्णाम् षट्सु ।

सप्तन् शब्द पञ्चन् शब्दवत् जानना ।

अष्टन् शब्दके रूप ।

प्र०	द्वि०	तृ०	च०
अष्टौ अष्ट	अष्टौ अष्ट ।	अष्टाभिः अष्टभिः ।	अष्टाभ्यः अष्टभ्यः

प०	प०	स०
अष्टाभ्य, अष्टभ्यः ।	अष्टनाम् ।	अष्टासु अष्टसु

नवन्से अष्टादशन् पर्यन्त समस्त नकारान्त संख्यावाचक शब्द पञ्चन् शब्दवत् जानना ।

ऊनविंशति आदिक संख्यावाचक शब्द एकवचनान्त होते हैं, द्वित्व बहुत्व समझना हो तो दो विंशति, तीन विंशति आदि कहनेसे द्विवचन बहुवचन भी होता है जैसे, द्वे विंशती । तिस्रो विंशतयः इत्यादि । ऊनविंशति शब्दसे नवनवति पर्यन्त शब्द व कोटि शब्द स्त्रीलिंग होते हैं । शत सहस्र अयुत लक्ष नियुत अर्बुद अन्त्य मध्य और परार्द्ध शब्द नपुसकलिङ्गी होते हैं । वृन्द खर्व शङ्ख पद्म व सागर शब्द पुलिङ्ग होते हैं ।

—— ०:——

पूर्णवाचक शब्द ।

—— ० ——

प्रथम द्वितीय तृतीय प्राय, पुरुष शब्दवत् जानना किन्तु चतुर्थी पंचमी व सप्तमीमें विकल्प होता है । ११४ वा नियम देखनेसे ज्ञात होगा ।

प्रथम शब्दके जस्में प्रथमे, प्रथमा दो रूप बनेंगे । प्रथम शब्द स्त्रीलिङ्गमें विद्या शब्दकी तरह जानना । चतर्थ पञ्चम आदिक शब्द पुलिंगमें पुरुष शब्दवत् जानना, स्त्रीलिंगमें नदी शब्दवत् और नपुसकलिंगमें धन शब्दवत् जानना ।

अव्यय शब्द।

११७। स्वर् प्रातर् स्वयम् है हे च वा तु हि किंयत् उपांशु अहह अहो एव । प्र परा अप सम् नि अव अनु निर् दुर् वि अधि सु उत् परि प्रति अभि अति अपि उप आ ये शब्द और चकार इत् प्रत्यय (जैसे; क्रमशः जलवत् इत्यादि) आदिक अव्यय शब्द हैं । अव्यय शब्दोंके आगें विभक्ति नहीं होती ये नित्य इसी एकरूपसे रहते हैं। इनमेसे प्र से लगाकर आ तकके २० शब्द धातुके पूर्व आनेपर उपसर्ग कहलाते हैं। अव्यय शब्दोंका विशेषण नपुंसकलिंग होता है।

कितनेही अव्यय अर्थ सहित नीचे लिखे जाते हैं यदि इन सब को स्मरण रक्खेंगे तो संस्कृत शिक्षार्थियोंको विशेष सुविधा होगी।

अव्यय	अर्थ	अव्यय	अर्थ
अग्रत	आगे	अञ्जसा	शीघ्र
अङ्ग	सम्बोधनमें	प्रतीव	अतिशय
अचिरात्	शीघ्र	अथ	अनन्तर यदि
अथकिम्	स्वीकारतामें	अहो बत	खेद
अद्य	आज	आहो,	प्रश्न
अध.	नीचे	आहोस्वित्	प्रश्न

अधस्तात्	अधोभाग (नीचें)
अधुना	अब,इस समय
अनु	पश्चात्
अन्तर	बीचमें
अन्तरा	,,
अन्तरेण	विना
अन्येद्युः	अन्यादि
अपि	प्रश्न, भी
अभितः	चारों ओर
अभीक्ष्णम्	बारबार,पुनःपुनः
अमुत्र	परलोक
अयि,अये	सम्बोधन
अर्वाक्	पश्चात्
अरे, अरेरे	सम्बोधन
अलम्	सामर्थ्य,निवारण (वस)
अवाक्	अधोभाग(नीचें)
असकृत्	बारबार
असाम्प्रतम्	अयोग्य
अस्तु	स्वीकार
अहह	खेद
अहो	आश्चर्य

आः	कोपार्थमें
इत्थम्	इसप्रकार
इव	समान,सदृश
उच्चैः	ऊंचा, महत्
उत,उताहो	वितर्क
उदक्	उत्तरदिशा
उपरि,	ऊपर
उपरिष्टात्	ऊर्ध्व, ऊपर
उभयेद्युः	दोनों दिन
उपांशु	निर्जन
ऊररी	स्वीकार
ऋते	विना
एकदा	एक समय
एव	निश्चय, ही
ऐषमः	वर्तमानवर्ष
ओम्	स्वीकार
कच्चित्	प्रश्नमें
कदा,कर्हि	किसीकालमें
किम्, किमु	प्रश्नमें
किल	निश्चय
कृते	निमित्तार्थमें
खलु	निश्चय

अव्यय	अर्थ	अव्यय	अर्थ
चिरम्,चिराय	देर,	नाम	सम्भावना
चिरस्य,चिरात्	विलम्ब,	निकषा	निकट
चिरेण	बहुकाल	नीचैः	नीचा अल्पशः
चेत्	यदि जो,	नु	भो०, प्रश्न,
जातु	कदाचित्	”	वितर्क
	(शायद)	नूनम्	निश्चय
झटिति	शीघ्र	परुत्	गतवर्ष, पहले
ततः, ततः	हेतु अर्थमे		वर्ष
तदा,तदानीं,	उससमय,	परश्व	परसों
तर्हि	तब, तो	पराक्	ऊर्ध्व
तावत्	तबतक, उस	परारि	विगतवर्ष,
	परिमाण,प्रथम	”	तीरसाल
तिर्यक्	वक्र,(टेढ़ा)	परितः	चारोंतरफ
तूष्णीम्	मौन,(चुपरहना)	परेद्यवि	अगले दिन
दक्षिणेन	दक्षिणदिशा	पश्य	विस्मयार्थमें
दिवा	दिन	पुनः पुनः	बारबार
दिष्ट्या	हर्ष सौभाग्यसे	पुरतः पुरः	आगे सन्मुख
दोषा	रात्रि	पुरस्तात्	प्रथम, आगे
द्राक्	शीघ्र	पुरा	पूर्वसमयमें,
धिक्	तिरस्कार	पूर्वेद्युः	पहिले दिन
नक्तम्	रात्रि	पृथक्	भिन्न, जुदा,

अव्यय	अर्थ	अव्यय	अर्थ
ननु	प्रश्न, निश्चय,	प्रभृति	आदि, वगैरह
	स्वीकार, सन्देह	प्रसह्य	जबरदस्तीसे
	भोः	प्राक्	पहिले,
नमस्	प्रणाम	प्रातः	प्रभात
प्राध्वम्	दूरके मार्गमें	प्रादुर्	प्रकाश, उदय
प्रेत्य	परलोक, मरकर	समन्ततः	सब ओर
भूयः	पुन., अधिकता	समया	समीप
भोः	सम्बोधन	सम्प्रति	इससमय
मनाक्	थोड़ासा	सम्यक्	भलेप्रकार
मा	निषेध, मत	सह	सहित
मिथः मिथो	परस्पर,	सहसा	अकस्मात्
"	निर्जन	साकम्	सहित
मुधा	वृथा	साक्षात्	प्रत्यक्ष
मृषा	मिथ्या	साचि	वक्र, तिरछा
यत्	ऐश्वर्य	साम्प्रतम्	इससमय
रे	नीच सम्बोधन	सायम्	सध्यासमय
बत	खेद	सार्द्धम्	सहित
		स्थाने	उचिततामें
बत्	पूर्णता, समास	स्म	अतीतार्थमें
बर	श्रेष्ठ, अच्छा	स्वधा	देवोद्देशसे
बहिः	बाहर		प्रदानकरनेमे
बाढम्	ठीक है	स्वयम्	निज आत्मा

विना,ऋते	रहित,	स्वस्ति	मङ्गलार्थ
विष्वक्	सबतरफ	हन्त	खेद
शनैः	धीरे २	हहो, हे,	सम्बोधन
शश्वत्	निरन्तर	हि	यस्मात्
श्वः	अगले दिन	"	निश्चय
सकृत्	एकबार	हीही	विस्मय
सत्यम्	स्वीकारतामे	हुम्	वितर्ककरनेमें
सपदि	उसीवक्त	होहो	विस्मयकी अधिकतामें
समन्तात्	चारों ओर	ह्यः	गत दिवस

११८। अव और अपि शब्दके अकारका कहीं २ लोप हो जाता है। जैसे,—अपि + धानम् = पिधानम्, अपिधानम्। अव + गाह = वगाह = वा अवगाह. अवर्धमान = वर्धमानः। इत्यादि।

पुल्लिंग शब्दोंसे स्त्रीलिंगत्व करनेके प्रत्यय।

११९। वात धन तृण रथ और नड इन शब्दोंके उत्तर तद्धितका 'य' करके आकारान्त करनेसे स्त्रीलिंग शब्द हो जाता है। जैसे वात्या, धन्या, तृण्या, रथ्या, नड्या।

१२०। गुरु स्वर (द्विमात्रिक) के परे व्यञ्जन वर्ण रहे, ऐसे धातुके उत्तर भाववाच्यमें अ प्रत्यय होकर स्त्रीलिंगमें आकारा-

रान्त हो जाता है। जैसे,—भिक्षा, निन्दा, ईहा, पूजा, चिन्ता
चर्चा, पीडा, हिंसा, लज्जा इत्यादि।

१२१। अकारान्त शब्दोंके उत्तर आप् प्रत्यय करनेसे स्त्रीलि
हो जाता है। प् इत् संज्ञक है सो लोप हो जाता है, आ मात्र
रहता है। जैसे,—मेघ—मेघा, सर्व—सर्वा, आगता, विशाला,
मलिना, भयंकरा, क्षेमंकरा, इत्यादि।

१२२। अक भागान्त शब्दोंसे परें आप् प्रत्यय करनेसे अक
की जगह इक हो जाता है। जैसे,—पाचक—पाचिका। शोषक-
शोषिका। वादक—वादिका। इत्यादि।

१२३। जातिवाचक अकारान्त शब्दोंके उत्तर स्त्रीलिंगमें
ईप् प्रत्यय होता है। प् इत् जाकर ई रहता है। जैसे,—हंसी,
कुक्कुटी, बिडाली, शृगाली, व्याघ्री, इत्यादि।

१२४। नान्त शब्द तथा नदादि शब्दोंके उत्तर भी ईप् प्रत्यय
होता है। जैसे,-कामिन् कामिनी। राजन्-राज्ञी। श्वन्-श्वनी।
युवन्- यूनी। नद—नदी चौरी, गौरी, कन्दरी इत्यादि।

१२५। मातृ यातृ ननान्दृ स्वसृ दुहितृ चतसृ इन शब्दोंके
अतिरिक्त समस्त ऋकारान्त शब्द तथा अञ्चु धात्वन्त शब्द
स्त्रीलिंगमें ईयन्त हो जाते हैं। जैसे,—धातृ-धात्री, हन्तृ-हन्त्री,
भोक्त्री, कर्त्री इत्यादि। अञ्च—तिर्य्यच्-तिरश्ची, उदीची, प्राची
इत्यादि।

१२६। गुणवाचक उकारान्त स्त्रीलिंग शब्द विकल्पसे ईयन्त
हो जाते हैं। किन्तु संयुक्त वर्णसे परें उ रहेगा तो नहिं होगा,

जैसे,—लघ्वी लघु । तन्वी, तनुः । संयुक्तवर्णसे परे जैसे,—पाण्डुः मञ्जु इत्यादिमें ईप् नहिं हुवा ।

१२७ । क्ति प्रत्ययान्त शब्दोंको छोड़कर ह्रस्व इकारान्त शब्द स्त्रीलिंगमे विकल्पसे ईकारान्त हो जाते हैं । जैसे,—श्रेणि श्रेणी । धरणि धरणी । क्ति-प्रत्ययवाले मतिः बुद्धि, भक्ति, इत्यादि शब्द ईकारान्त नहिं होते ।

१२८ । तनु चञ्चु कमण्डलु सरयु कुहु रज्जु ये कइयक शब्द स्त्रीलिंगमें कहीं २ दीर्घ ऊकारान्त हो जाते हैं । जैसे,—तनूः, तनुः । चञ्चूः चञ्चुः । सरयूः सरयु । इत्यादि ।

१२९ । स्वाङ्ग वाचक शब्द उत्तर पदमें रहकर समस्त पद विशेषण होय तो स्त्रीलिंगमें ईवन्त तथा आवन्त दोनो प्रकार होते हैं । जैसे,—चारुमुखी, चारुमुखा । बिम्बोष्ठी, बिम्बोष्ठा । दीर्घकेशी, दीर्घकेशा । किन्तु नेत्र, भुज, पुच्छ, क्रोड़, जिह्वा गज खुर, गण्ड, गुल्फ, तुण्ड, ग्रीवा ये शब्द आवन्त ही होते हैं । जैसे,—चारुनेत्रा । दीर्घभुजा । स्थूलक्रोडा इत्यादि ।

१३० । पत्नी अर्थ समझाना हो तो स्त्रीलिंगमें ईप् होता है किन्तु पालक शब्द अन्तमें होय तो नहिं होता । जैसे,—गोपस्य पत्नी गोपी । शूद्रस्य भार्या शूद्री (शूद्रजातीय स्त्री शूद्रा कहलाती है) इसी प्रकार दासी, नटी, चण्डाली । पालक जैसे,—गोपालकस्य पत्नी गोपालिका । मेषपालिका । महिषपालिका । इत्यादि ।

१३१ । ईश्वर शब्द तथा शोणादि शब्द स्त्रीलिंगमें ईवन्त

---

(१) शोणादि—शोण, चण्ड, कृपण, विशाल, विकट, पुराण ।

आवन्त होते हैं। जैसे,—ईश्वरी ईश्वरा। शोणी शोणा। चण्डी चण्डा। किन्तु षष्ठीसमासमें ईश्वरा नहिं होता है। जैसे,—सुरेश्वरी। भारतेश्वरी, इत्यादि।

१३२। ब्रह्मन् रुद्र भव सर्व मृड इन्द्र वरुण शब्दोंके उत्तर पत्नी अर्थमें आनी प्रत्यय होता है। जैसे,—ब्रह्माणी, रुद्राणी, भवानी, सर्वाणी, मृडानी, इन्द्राणी, वरुणानी।

१३३। पत्नी अर्थमें उपाध्याय शब्दके उत्तर आनी और आप् प्रत्यय होता है। जैसे,—उपाध्यायानी वा उपाध्याया। किन्तु स्वयं व्याख्यात्री होय तो उपाध्यायी ऐसा होगा।

१३४। क्षत्रिय और आर्य शब्द पत्नी अर्थमें ईबन्त होते हैं, और जाति समझी जाय तो इनके उत्तरमें आनी वा आ होता है। जैसे,—क्षत्रियस्य पत्नी—क्षत्रियी। क्षत्रियजातीया स्त्री क्षत्रियाणी वा क्षत्रिया होगा। इसी प्रकार आर्यस्य पत्नी—आर्य्यी। आर्यजातीय होनेपर आर्य्याणी वा आर्या होता है।

१३५। पत्नी अर्थमें नर व नृ शब्दके उत्तर ईप् करनेसे नारी होता है। जैसे,- नरस्य वा नुः पत्नी—नारी।

—:०—

वचन।

—:०—

१३६। एकत्व (एकपणा) द्वित्व (दोपणा) बहुत्व (बहुपणा) का जो बोधक (बतानेवाला) हो उसे वचन कहते हैं जैसे,—घट = एक घड़ा। घटौ = दो घड़े। घटाः = बहुत घड़े इत्यादि।

विशेष्य।

१३७। जिसके द्वारा व्यक्ति, वस्तु तथा जाति गुण क्रिया समझी जाय, उसका नाम विशेष्य है। जैसे,—मानव वृहस्पतिः शुक्रः भूमिः पक्षी नीलिमा गमनम् परिचर्या इत्यादि।

—०—

विशेषण।

१३८। जिन पदोंके द्वारा विशेष्यके गुण या अवस्थायें प्रकट की जाय उनका नाम विशेषण है। विशेष्यमे जो लिंग विभक्ति व वचन होगा वही लिंग विभक्ति व वचन विशेषणमें भी होता है। जैसे,—नीलो घटः। सुन्दरौ बालकौ। हास्यमुखी बाला। पक्वानि फलानि। तस्य बालकस्य इद पुस्तकम्। इमानि पुस्तकानि। गुणवान् पुरुष। गुणवन्त पुरुषम्। गुणवता पुरुषेण। इत्यादि।

—०—

क्रियाविशेषण।

१३९। जो पद क्रियापदके गुणादिको प्रकाश करे उसको क्रियाविशेषण कहते है। क्रियाविशेषणमें नपुसक लिंगकी द्वितीया विभक्तिका एक वचन हुवा करता है। जैसे,—द्रुत गच्छति। लाघु पृच्छति।

१४०। प्रकारार्थमें गुणवाचक शब्द कभी २ अभ्यस्त (दुगुणा) होकर क्रियाविशेषण हो जाता है। जैसे,—लघु लघु गच्छति। मधुर मधुर हसति। इत्यादि।

अथ कारक।

—०:—

१४१। क्रियाके साथ जिसका अन्वय (सम्बन्ध) रहै, उसको कारक* कहते हैं। कारक ६ प्रकारके हैं। जैसे,—१ अपादान, २ सम्प्रदान, ३ करण, ४ अधिकरण, ५ कर्म, ६ कर्ता।

अपादान।

१४२। जिससे अपाय (चलना पतन होना स्खलन होना या अलग होना) भय, ग्लानि (जुगुप्सा), पराजय, प्रमाद, आदान (ग्रहण) उत्पत्ति (जन्म आविर्भाव, प्रादुर्भाव प्रकाश) त्राण (रक्षा) विराम, अन्तर्धान, निवारण, अध्ययन (पठन श्रवण ज्ञानार्थ जो प्रयोग होता है) और लज्जा समझी जाय उसको अपादान कारक कहते हैं। अपादानमें पचमी विभक्ति होती है। जैसे,—अपाय-वृक्षात् फल पतति। शाखायाः पत्र स्खलति। भय-दुर्जनात् बिभेति। ग्लानि-पापात् जुगुप्सते धीरः। पराजय हस्ती सिंहात् पराजयते। प्रमाद—धर्मात् प्रमाद्यति। आदान-सागरात् जलं गृह्णाति। उत्पत्ति-पितुः पुत्रो जायते। त्राण-व्याघ्रात् गां रक्षति। त्रायते महतो भयात्। विराम-ध्यानात्

* जहांपर दो कारकोंका सन्देह होय वहां अगला कारक समझा जायगा। जैसे—चलति गौः अवलोकय यहांपर गौः पद, चलति इस क्रिया का कर्ता होगा अथवा अवलोकय क्रियाका कर्म होगा ऐसा सन्देह होता है। इसकारण अगला कारक कर्ता होगा।

विरमति। अन्तर्धान-गुरोरन्तर्धत्ते। निवारण-पापात् भ्रातरं निवारयति। अध्ययन-गुरोः शास्त्रं अधीते। पितुः पठति। लज्जा अधर्मात् लज्जते। इत्यादि।

सम्प्रदान।

१४३। जिसको कोई वस्तु दान की जाय, अथवा जिसको उद्देश करके दान की जाय उसका नाम सम्प्रदान कारक है। सम्प्रदानमें चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे,—विप्राय धनं देहि। भक्तः कृष्णाय पुष्पाञ्जलिं ददाति। दरिद्राय वस्त्रं प्रयच्छति। विद्यार्थिने पुस्तकं ददाति। इत्यादि।

करण।

१४४। जिसके द्वारा क्रिया (कार्य) सम्पादन होती है, उस

---

(१) तिरोधत्ते, निलीयते, पलायते, छायते इत्यादि क्रियापद अन्तर्धावाचक हैं।

(२) निषेधति, निवर्तयति, अन्तरयति, आदि भी क्रियापद निवारणवाचक हैं।

(३) स्वत्व त्याग करके दान नहि किया जाय तो वहांपर चतुर्थी विभक्ति नही होती जैसे, रजकस्य वस्त्रं ददाति। यहांपर चतुर्थी नहीं हुई। तथा दानका पात्र न होय तो भी सम्प्रदानकारक नही होता जैसे,—"दरिद्रान् भर कौन्तेय मा प्रयच्छेश्वरे धनम्" यहां अपात्रके द्योतनार्थ ईश्वर शब्द चतुर्थी विभक्ति नही करके सप्तमी विभक्ति दीगई है।

(४) साधकतमं करणं जो क्रियाके एपरम मुख्य कारण व उपयोगी हो उसको ही हैं।

का नाम करण कारक है। करणमें तृतीया विभक्ति हुवा करती है। जैसे,—अस्त्रेण छिनत्ति। यष्टया प्रहरति। कराभ्यां हन्ति। वाणैर्विध्यति। इत्यादि।

अधिकरण।

१४५। क्रियाके आधारका नाम अधिकरण कारक है। कालाधिकरण भावाधिकरण और आधाराधिकरण भेदसे तीन प्रकारका अधिकरण है। कालाधिकरण—वर्षासु भेकाः शब्दायन्ते। स अस्तमनवेलायां गतः। शरदि नद्यो निर्मला भवन्ति। स प्रत्यहं याचते इत्यादि।

भावाधिकरण—जिसकी क्रिया अन्य क्रियाको लक्ष्य करें,उसे *भावाधिकरण* कहते हैं। जैसे,—*मयि गते स आगमिष्यति*, फले पतति सति अहं यास्यामि, तस्मिन् चन्द्रं दृष्टवति सति, वालिकायां गतायां सत्यां अहं गमिष्यामि। कर्मणि वाच्ये यथा,—रामेण धनुषि गृहीते जनकस्तुष्टो बभूव, इत्यादि।

आधाराधिकरण-एकदेश, विषय, व्याप्ति और सामीप्य भेदसे चार प्रकारका है। एकदेश—स वने वसति= वनके एकदेशमें वसता है। विषय—स शास्त्रे निपुणः=वह शास्त्रीय विषयमें निपुण है। व्याप्ति—तिलेषु तैलमस्ति= तिलके समस्त अवयवोंमें तेल है। सामीप्य—स गंगायां वसति= वह गंगाके निकट (समीप) रहता है, इत्यादि।

कर्म।

१४६। जो देखा जाय, किया जाय, सुना जाय, लिया जाय

जाय, पिया जाय अर्थात् जो क्रियाका व्याप्य होय उसे कर्मकारक कहते हैं। कर्तृवाच्यमें द्वितीया विभक्ति और कर्मणिवाच्यमें प्रथमा विभक्ति होती है। यथा, कुम्भकार घट करोति। शिशुश्चन्द्र पश्यति। आचार्याः शास्त्रान् वदन्ति। स उपदेश शृणोति। स पुस्तक गृह्णाति। शिशुर्दुग्ध पिबति। कर्मणिवाच्य यथा—तेन विष्णु स्तूयते। तैर्दोषा' त्यज्यते। इत्यादि।

स ग्राम गच्छति। सीता अग्नि प्रविशति। वानरो वृक्षमारोहति। रामो वन याति। इत्यादि स्थलोंमें ग्राम अग्नि वृक्ष व वन क्रिया का व्याप्य होनेके कारण कर्म हो गये हैं। वक्ताकी इच्छा होय तो ग्रामे गच्छति, अग्नौ प्रविशति, इत्यादि प्रयोग भी कर सक्ता है।

द्विकर्मक।

१४७। याच्ञार्थ,* धातु, तथा दुह्, चि, प्रच्छ, रुध्, ब्रू शास जि, नी, वह, ह, दण्डि, ग्रह, कृष्, मन्थ, मुष्, और पच् आदिक धातु द्विकर्मक (दो कर्मवाले धातु) हैं। दो कर्मोंमें एक कर्म मुख्य होता है और दूसरा कर्म गौण होता है। जैसे,—दरिद्र राजान धन याचते। गोपा गा दुग्ध दोग्धि, व्रजबालकाः वृक्षान् फलानि अवचिन्वन्ति। शिष्यो गुरु शास्त्रार्थं पृच्छति। कृष्ण गोपीर्गोकुल रुरोध। गुरु शिष्य शास्त्रमब्रवीत्। कृष्ण. सवत्सान् व्रज निनाय। राम जनक सीतां जग्राह। देवाः समुद्र' अमृत ममन्थुः। इत्यादि।

---

* याच्, प्र—अर्थ्, भिक्ष् आदिक।

(२) वद्, कथ् भाष, उपदिश्, इत्यादि धातुका ग्रहण होता है। जैसे,—राजान वेदमुपदिशति

कर्त्ता।

१४८। जो कहता है, करता है, रखता है, चलता है इत्यादि क्रियाके व्यापारको करै उसे कर्ता कारक कहते हैं। कर्तृवाच्य कर्ता कारकमें प्रथमा और कर्मणिवाच्य कर्तामें तृतीया विभक्ति होती है जैसे,—साधु स्तौति। शिशुः शेते। अश्वो धावति। कर्मणिवाच्य में जैसे,—शिष्येन गुरु पूज्यते। अर्जुनेन सेनापतयो हन्यन्ते। इत्यादि।



अर्थविशेष, शब्दविशेष, व क्रियाविशेषके योगसे विभक्ति प्रयोग व निर्णय।

प्रथमा विभक्तिः।

१४९। (१)सम्बोधनमें प्रथमा विभक्ति होती है। हे कृष्ण! आगच्छ। हे शिशू आगच्छतम्। हे शिशव आगच्छत। इत्यादि।

१५०। जहांपर केवल मात्र किसी व्यक्ति व वस्तुज्ञानार्थ शब्द प्रयुक्त किया जाय वहा प्रथमा विभक्ति होती है। इसको लिङ्गार्थ में प्रथमा वा अभिधेयार्थमें प्रथमा कहते हैं। जैसे,—कृष्णः, स्त्री, ज्ञान, जता, वृक्षः, इत्यादि।

---

(१) किसीको चिता कर अपने सन्मुख करनेको सम्बोधन कहते हैं।

(२) जहापर लिंगार्थमें प्रथमा विभक्ति होती है, वहा क्रियाका अध्याहार करनेसे वह कर्तृकारक होता है।

१५१। अव्ययके योगमें भी प्रथमा विभक्ति होती है जैसे — अथ स क्रमात् अमु नारद इति बुबुधे। विपवृक्षोऽपि संवर्द्ध्य स्वय च्छेतुमसाम्प्रतम् इत्यादि।

१५२। कर्म उक्त होनेपर अर्थात् कर्मणि वाच्यमें कर्ममें प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे,—गुरुणा शिष्य पठ्यते। तेन जिनः स्तूयते। इत्यादि।

१५३। क्रियाविशेषणमें नपुंसकलिङ्गकी प्रथमा विभक्ति होती है जैसे,—शीघ्र गच्छति। सहर्ष धावति इत्यादि।

१५४ धिक् और प्रतिके योगमें द्वितीया होती है। जैसे,—पापिनं धिक्। दुरात्मान धिगस्तु। गुरु प्रति विनय कुरु इत्यादि।

१५५ समया* निकषा हा अन्तराके योगमें द्वितीया विभक्ति होती है। यथा,—प्रयाग समया गंगा = प्रयागके निकट गगा है। पातालस्वर्गौ समया मर्त्यलोक = पाताल तथा स्वर्ग लोकके मध्य मर्त्यलोक है। प्रयाग निकषा गगा—प्रयागके निकट गगा है। जिनद्विष लोक हा = जिनेंद्रसे द्वेष करनेवाले विषाद करने योग्य हैं। रामकृष्णौ अन्तरा गोपबालकाः क्रीडन्ति।

१५६ अन्तरेण, विना, ऋते, के योगमें भी द्वितीया होती है। जैसे,—शम्भुम् अन्तरेण गिरिं धर्तुं कः समर्थः। दुःख विना सुखं न भवति। भक्तिम् ऋते चित्तशुद्धिर्न भवति।

---

* समया—सामीप्यवाची एव मध्यवाची है।

(२) निकषा—सामीप्यवाची है। (३) हा विषादशोकवाची है।

(४) अन्तरा मध्यवाची है।

१५७ पश्चात् अर्थवाले अनुके योगमें भी द्वितीया होती है। कृष्ण. रामं अनुयातः। पर्वतमनु वसते सेना। अन्वर्जुनं योद्धारः। इत्यादि।

१५८ पर्यन्त अर्थवाले यावत् अव्ययके योगमें द्वितीया होती है। जैसे,—तस्य यशः समुद्र यावद्विस्तीर्णं। यावद्वनं वसति सः।

१५९ एन प्रत्ययान्तवाले पदके योगमे भी द्वितीया होती है। जैसे,—हिमालय दक्षिणेन विन्ध्यगिरिं उत्तरेण च आर्यावर्तः।

१६०। अतिक्रम अर्थवाले अति अव्ययके योगमें द्वितीया होती है। जैसे,—जिनेंद्रं अति ईश्वरो न। अर्थात् जिनेंद्रसे अधिक ईश्वर नहीं है।

१६१। परितः सर्वतः उभयतः अभितः इन शब्दोंके योगमे भी द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे,—हिमालय परितः गन्धर्वाः पर्यटन्ति। द्वारका सर्वत यादवाः नतिवसन्ति। उभयतो ग्रामं क्रमुकवनानि। अभितो ग्राम पनवनानि।

१६२ व्याप्ति अर्थमें अध्ववाचक व कालवाचक शब्दमे द्वितीया विभक्ति होती है जैसे,—अध्ववाचक—देवर्षि प्रतिदिन बहून् क्रोशान् पर्यटति कालवाचक,—सोऽत्र त्रीन् मासान् स्थितः।

१६३ अधिपूर्वक आस्, वस् शी और स्था धातुके योग होने पर अधिकरणमें द्वितीया विभक्ति होती है जैसे,—अधि-आस् —स हिमालय मध्यास्ते वस्—हरिः क्षीराब्धिमधिवसति. शी—कृष्ण. अनन्तस्य फणमधिशेते। स्था—शिव. कैलासमधितिष्ठति।

तृतीया विभक्ति।

१६४ सहार्थ शब्दके योगमें तथा सह अर्थ समझानेमें तृतीया विभक्ति होती है। सहार्थ शब्दके योगमें जैसे,—पित्रा सह गच्छ। केनापि सार्धं विवादो न कर्त्तव्य। स्त्रिया साकं ममार स। दुर्जनेन समं मा गच्छ। सहार्थमें जैसे—रामो लक्ष्मणेन वनं याति= राम लक्ष्मणके साथ वनमें जाता है। इत्यादि

१६५ क्रिया समाप्ति तथा फलप्राप्ति समझी जाय तो कालवाचक शब्दोंमें तृतीया होती है। इसको अपवर्गमें तृतीया ऐसा भी कहते हैं। जैसे,—कृष्णः मासाभ्यां सर्वशास्त्रं अधीतः। तेनेदं त्रिभिर्वर्षैः कृतम्। अर्थसिद्धि होनेपर द्वितीया विभक्ति होगी जैसे,—अयं बटुः त्रीन् वत्सरान् व्याकरणं अधीतवान् न तु स्फुरति।

१६६ ऊनार्थ, वारणार्थ, सादृश्यार्थ युक्तार्थ और प्रयोजनार्थ शब्दोंके योगमें तृतीया होती है ऊनार्थ-एकेन ऊनः ज्ञानेन हीनः, पशुभिः समानः, जलेन शून्यः। बुद्ध्या रहितः सुखेन विरहितः वारणार्थ जैसे,—शोकेन किम्? चेष्टया वृथा विवादेन अलम्, सादृश्यार्थ-जैसे,—जनोऽयं देवेन सदृशः धर्मेण समो बन्धुर्न

(१) ऊनार्थ–ऊन, हीन, रहित, विरहित, शून्य, त्यक्त इत्यादि।

(२) वारणार्थ–किम्, वृथा, अलम् इत्यादि।

(३) सादृश्यार्थ–सदृश, सम, तुल्य, समान, उपमा, तुला इत्यादि।

(४) युक्तार्थ–युक्त, मिलित, मिश्रित, विशिष्ट, समेत, इत्यादि।

(५) प्रयोजनार्थ–प्रयोजन, अर्थ, कार्य इत्यादि।

१७१ जिस विशेष्य पदकी तृतीया क्रियाविशेषणकी सदृश होय उसको उपसख्याने तृतीया कहते हैं, जैसे,- वेगेन गच्छति, अनायासेन करोति, इत्यादि।

चतुर्थी विभक्ति।

१७२ जिसके उद्देशसे असूया, क्रोध, ईर्ष्या, रुचि, द्रोह, स्पृहा, श्लाघा की जाय उसमें चतुर्थी होती है, जैसे,—असूया— खल, साधवे असूयति। क्रोध —पिता पुत्राय क्रुध्यति, कुप्यति वा। ईर्ष्या–गुणी गुणिने ईर्ष्यति। रुचि मोदक शिशवे रोचते। द्रोह -शत्रवे द्रुह्यति वा द्वेष्टि। स्पृहा साधु मुक्त्यै स्पृहयति, श्लाघा-पिता पुत्राय श्लाघते इत्यादि

१७३ निमित्तार्थमें चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा,—काष्ठा गच्छति, पाकाय व्रजति इत्यादि।

१७४ अपपूर्वक राध् धातुके योगमें चतुर्थी होती है। जैसे शिष्यो गुरवे अपराध्यति।

१७५ शक्तार्थ शब्द व शक्तार्थ क्रियाके योगमें चतुर्थी विभ होती है। कृष्ण दैत्येभ्यः अलम्। राम राक्षसेभ्य स क्रिया–इन्द्रो वृत्राय प्रभवति।

१७६ वषट् स्वाहा, स्वधा स्वस्ति हित, सुख व नम योगमें चतुर्थी होती है। जैसे, शिवाये वषट्, अग्नये स्वाहा स्वधा, तुभ्यस्वस्ति, साधुभ्य हितम् सद्भ्य सुखम्, गुरवे

---

(१) असूया–गुणेषु दोषारोपः—गुणोंमें दोषारोपण करना सो अ

(२) नमस् शब्दके साथ क्रियाका योग होय तो विकल्पसे न

[illegible] गुरु नमस्कृत्य।

१७७ क्रियाके योग होनेपर भी चतुर्थी होती है, जैसे,—माता शिशवे चन्द्रं दर्शयति, इन्द्राय मालां निक्षेप, इत्यादि।

१७८ चेष्टा समझी जाय तो गत्यर्थ धातुके योग होनेपर कर्ममें चतुर्थी विकल्पसे होती है, जैसे,—कृष्ण, गोकुलाय, गोकुलं वा व्रजति।

१७९ अवज्ञा अर्थमें दिवादि गणीय मन् धातुके योग होनेपर अवज्ञासूचक कर्ममें चतुर्थी द्वितीया दोनों होती हैं। जैसे,—भवन्तमहं तृणाय न मन्ये तथा तृणं न मन्ये, इत्यादि।

१८० आशीर्वाद अर्थमें अस्तु, भवतु, भूयात् इन सब क्रियाओंके योगमें विकल्पसे चतुर्थी होती है। जैसे – तुभ्यं शिवमस्तु वा तव शिवमस्तु इत्यादि।

पञ्चमी विभक्ति।

१८१ यप् प्रत्ययान्त पद अध्याहार होनेपर कर्म वा अधिकरणमें पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसें,—पर्वतात् पश्यति-पर्वतमारुह्य इत्यर्थः। आसनात् निरीक्षते—आसने उपविश्य इत्यर्थ।

१८२ काल और मार्ग अर्थमें अवधिबोधक शब्दके उत्तर पञ्चमी होती है। जैसे,—वैशाखात् पञ्चमे मासि याति सिंहे प्रभाकरः।

१८३ अन्यार्थ शब्दके योगमें पञ्चमी होती है। जैसे,—धर्मात्, अन्यः कस्त्रातु समर्थ? शिवात् विष्णुः न इतरः, घटात् पट पृथक्, घटः पटात् भिद्यते।

१८४ बहिः आरात् प्रभृति, तथा आरम्भार्थके योगमें पञ्चमी

होती है । जैसे,—गृहादहिं । कृष्णात् भ्रातात् । जन्मन प्रभृति सोऽन्धः । बाल्याद्रारभ्य स मूकः इत्यादि ।

१८५ दिशा, देश, व कालवाचक शब्दोंके योगमें पञ्चमी होती है । जैसे,—दिशा—ग्रामात् पूर्वस्या दिशि । देश—हिमालयात् उत्तरतः, काल—गमनात् प्राक्, विवादात् परम्, मृत्योरनन्तरम्, इत्यादि ।

१८६ आ और आदि प्रत्ययवाले शब्दके योगमें पञ्चमी होती है, जैसे,-हिमालयात् उत्तरा मानस सर , वासभवनात् उत्तराहि विलासभवनम् ।

१८७ विना, ऋते, और आङ्के योगमें पञ्चमी होती है । जैसे धनाद्विना सुख न, ज्ञानात् ऋते मुक्तिः, आमृत्योः सेव्यता धर्मः, इत्यादि ।

१८८ अपेक्षार्थ शब्दके योगमें पञ्चमी होती है जैसे,—"जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ।"

१८९ हेतुमें पञ्चमी होती है । जैसे,—शोकात् रोदिति । धनात् कुलम् ।

१९० हेत्वर्थमें तृतीया चतुर्थी और पञ्चमी तीनों होती हैं इनमेंसे अतीत हेतु होनेपर तृतीया और पञ्चमी होती है, जैसे हर्षेण नृत्यति, शोकात् रोदिति । यहापर हर्ष और शोक होगय है इस कारण नृत्य और रोदन करता है और भविष्यत् हे होनेपर चतुर्थी होती है, जैसे,--धनाय गच्छति, ज्ञानाय पठ

— • —

षष्ठी विभक्ति।

१९१ सम्बन्धमें षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे,—मम धनम्। तव भ्राता। तस्य गृहम्।

१९२ कृत् प्रत्ययके योग होनेसे कर्त्ता व कर्ममें षष्ठी होती है, कर्त्तामें जैसे,—बालकस्य रोदनम्। नारदस्य गमन। कर्ममें जैसे, ब्रह्मस्य बुभुत्सा। दुग्धस्य पान इत्यादि। किन्तु—

शतृ, शानच्, क्वसु, कानच्, स्यतृ, स्यमान, तुम्, क्त्वाच्, यप् णम् इन प्रत्ययोंके योगमें षष्ठी नहि होती, जैसे,—शतृ—चन्द्र पश्यन् स याति। शानच्—कवच बिभ्राणः, क्वसु—धनं ददिवान्, तुम्—जलं पातु गच्छति। क्त्वाच्—वेद पठित्वा। यप्—वच समाकर्ण्य। णम्—गुरु स्मारं स्मारं। तथा—

जिन सब कृत् प्रत्ययोंके अन्तमें उ है उनके योगमें भी षष्ठी नहि होती, जैसे —धन जिघृक्षुः। रावणं जिष्णुः। गुरु वन्दारु। तथा—

उक प्रत्यय, शीलार्थ तृन्, भविष्यदर्थमें णिन्, खलार्थ प्रत्यय तथा निष्ठादि प्रत्ययके योगमें भी षष्ठी नहि होती, जैसे- उक-गिलां सर्पुकः। शत्रु घातुक। शीलार्थ तृन्—पुष्प घ्राता, खलार्थ—मया इद कर्म दुष्कर। तेन रिपुरय दुःशासन। निष्ठा—मया भारत श्रुतम्। स व्याकरणमधीतवान्।

१९३ स्मरणार्थ धातु और दय्, ईश् धातुके योग होनेपर कर्ममें षष्ठी विकल्पसे होती है। जैसे,—मातुः स्मरति मातर वा। तेषां कस्मान्न दयसे, इत्यादि।

सप्तमी विभक्ति।

१९४। निर्धारणमे सप्तमी और षष्ठी दोनों विभक्ति होती हैं। जैसे,—पुरुषेषु क्षत्रिय शूरतम । पुरुषाणा क्षत्रिय शूरतम'। गोषु कृष्णा गौ सम्पन्नक्षीरा, गवां कृष्णा गौ सम्पन्नक्षीरा, इत्यादि।

१९५। कर्मयुक्त निमित्त पदमें सप्तमी होती है। जैसे,—

" चर्मणि द्वीपिन हन्ति दन्तयोर्हन्ति कुञ्जर।
केशेषु चमरीं हन्ति सीम्नि पुष्कलको हत" ॥ १ ॥

१९६। स्वामी, ईश्वर अधिपति, दायाद, साक्षी, प्रतिभू, प्रसूत, कुशल, इन शब्दोंके योगमें षष्ठी सप्तमी दोनों ही होती हैं। जैसे,—स अस्य गृहस्य वा अस्मिन् गृहे स्वामी। कलहस्य वा कलहे साक्षी। धनस्य धने वा ईश्वरः, इत्यादि।

१९७। हेतु निमित्त कारण प्रभृति शब्दोंके योगमें जिसके निमित्त हो उसमे तृतीयासे लगाकर सब विभक्तियें होती हैं परन्तु ऐसे स्थलोंमें षष्ठीका प्रयोग अधिकतर देखनेमे आता है। जैसे,—धनस्य हेतो भिक्षुकोऽयम् अपेक्षते 'अल्पस्य हेतोर्बहु हातुमिच्छन्'

१९८। कालवाचक और भाववाचक शब्दोंमें प्रायः सप्तमी होती है। जैसे,— शरदि पुष्पन्ति सप्तच्छदा । स गोषु दुह्य मानासु गत ।

१९९। सति अर्थमें सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे,—ज्ञाने सति भोगः। ज्ञाने सति मोक्ष"।

२०० निमित्तबोधक शब्द यदि सर्वनाम होय तो जिसके निमित्त

---

(१) जाति गुण क्रियादिसे समुदायमेंसे पृथक करनेको निर्धारण कहते हैं।

हो उसमें प्राय. सब ही विभक्तियें होती हैं । जैसे,—किं कारणं त्वमागत: । केन हेतुना स जगाम । कस्य हेतो. स समागतः । कस्मिन् कारणे स न आगतः इत्यादि ।

समास ।

२०१ दो या उनसे अधिक पदोंको एक करनेका नाम समास है । समास करनेमें पूर्व पदकी विभक्तियोंका लोप होकर एक पद हो जाता है, और अन्तके पदमें विभक्तिका योग होता है । जैसे,—राजपुत्रः । किन्तु क्रियापदोंके साथ समास नहिं होता । जैसे,—लिखति च पठति च = लिखतिपठति ऐसा नहिं होगा । जहा विभक्तिका लोप नहि होता वहां समास नहिं होता । जैसे,– राज्ञः पुत्र ।

समास ६ प्रकारका है—द्वन्द्व, बहुव्रीहि, कर्मधारय, तत्पुरुष, द्विगु और अव्ययीभाव।

२०२ समासमें पूर्वपद स्त्रीलिंग सर्वनाम होगा तो वह पुलिंग हो जायगा तथा पूर्वपदस्थ न् का लोप हो जाता है।

२०३ समासमें पूर्वपदस्थ च् ज् के स्थानमें क् हो जाता है और पूर्वपद यदि वसु प्रत्ययान्त होता है,तो स् के स्थानमें त् हो

(१) "पदयोस्तु पदानां वा विभक्तिर्यत्र लुप्यते ।
स समासस्तु विज्ञेय कविभि॰ परिकीर्तित ॥

(२) "बहुव्रीह्यव्ययीभावो द्वन्द्वतत्पुरुषौ द्विगु. ।
कर्मधारय इत्येते समासा षट् प्रकीर्तिता. ॥"

जाता है। पूर्वपदके अन्तमें द् ध् के स्थानमें त् और भ् के स्थानमें प् हो जाता है। जैसे,—वाच पति = वाक्पति। वणिजो भावः = वणिक्+भाव = वणिग्भाव। विद्वस् जन = विद्वस्+जन = विद्वज्जन। इसी प्रकार शरत्काल, ककुभ = ककुप्, अनुष्टुप्छन्द।

२०४ समासमें परपदकी आदिमें स्वर होता है तो पूर्वपदस्थ न् के स्थानमें अन् तथा परपदकी आदिमें व्यञ्जन होता है तो न के स्थानमें अ विकल्पसे हो जाता है। जैसे,—न उदयः = अनुदय वा नोदयः। न धर्म = अधर्म इत्यादि।

द्वन्द्वसमास।

---

२०५ जिस समासमें समस्त पद प्रधान हो उसको द्वन्द्व समास कहते हैं। द्वन्द्वसमास तीन प्रकारका है जैसे—इतरेतरद्वन्द्व, समाहारद्वन्द्व और एकशेषद्वन्द्व।

इतरेतरद्वंद्व।

२०६ विशेष्य पदकी प्रधानता रहकर जो समास होता है, उसका नाम इतरेतरद्वन्द्व समास है। जैसे,—ऋषभश्च वर्द्धमानश्च तौ—ऋषभवर्द्धमानौ। पूर्वा च पश्चिमा च ते-पूर्वपश्चिमे। गिरिश्च नदी च ते-गिरिनद्यौ। वृक्षश्च फलञ्च ते-वृक्षफले। रामश्च लक्ष्मणश्च भरतश्च ते—रामलक्ष्मणभरताः इत्यादि।

२०७ ऋकारान्त शब्द व पुत्रशब्दके परे रहते पूर्ववर्त्ती ऋकारान्त शब्दके ऋके स्थानमें आ हो जाता है जैसे,—माता च पिता च तौ मातापितरौ। पिता च पुत्रश्च तौ–पितापुत्रौ। किन्तु समान गोत्र नहि होय तो ऐसा नहि होता। जैसे,—जामाता च पुत्रश्च तौ—जामातृपुत्रौ।

जाया च पतिश्च तौ—दम्पती। माता च पिता च—मातरपितरौ कुशश्च जवश्च—कुशीलवौ। स्त्री च पुमांश्च—स्त्रीपुंसौ। रात्रिश्च दिवा च—रात्रिन्दिवम्। अहश्च निशा च—अहर्निशम्। अहश्च रात्रिश्च—अहोरात्रम्। सूर्याचन्द्रमसौ, मित्रावरुणौ, अग्नीसोमौ ये सब पद निपातनसे सिद्ध हुये हैं।

समाहारद्वन्द्व।

२०८ एकत्र समावेश व एकाङ्गकी वस्तु हो तो समाहारद्वन्द्व होता है और समाहारद्वन्द्वमें नपुंसकलिंगका एकवचन होता है। जैसे,—हस्तौ च पादौ च—हस्तपादम्।

२०९। जीवोंके अंगवाचक, वाद्यवाचक, युद्धवाचक शब्दोंमें समाहारद्वन्द्व होता है। जैसे,—अंगवाचक—पाणी च पादौ च—पाणिपादम्, करचरणम्। श्रोत्राक्षिनासावदनम्। वाद्य—वीणा च वेणुश्च वीणावेणु। शंखशृंगम्। मृदंगपणवम्। भेरीपटह। ढोलढक्कम्। षड्जमध्यमधैवतम्। युद्धांग—हस्तिनश्च अश्वाश्च हस्त्यश्वम्। धनूंषि च वाणाश्च—धनुर्वाणम्। एकवचनमें धनुश्च शरश्च धनुःशरौ। इत्यादि।

---

(१) बहु वचन नहिं हो तो युद्धवाचक शब्दोंमें समाहार द्वन्द्व नहिं होता।

सुखासुखम्। गवाश्वम्। पुत्रपौत्रम्। कुब्जवामन। मलमूत्रम्। दासीदासम्। धर्माधर्मम्। दधिघृत इत्यादि कितने ही शब्दोंमें नित्य ही समाहारद्वन्द्व रहता है।

एकशेष द्वन्द्व।

२१० जिस समासमें एक ही पद शेषमें रहे, उसको एकशेष द्वन्द्व समास कहते हैं। जैसे,—तरुश्च तरुश्च तरू। फलञ्च फलञ्च फलञ्च-फलानि। ब्राह्मणश्च ब्राह्मणी च ब्राह्मणौ। माता च पिता च—पितरौ। श्वश्रूश्च श्वशुरश्च—श्वशुरौ। भ्राता च स्वसा च भ्रातरौ। पुत्रश्च दुहिता च-पुत्रौ। शुक्लश्च शुक्ला च शुक्लञ्च-शुक्लम् शुक्लानि।

---

(१) समानाकारविशिष्ट अनेक पदोंमेंसे एक ही पद अवशिष्ट रहता है। एकवचनान्त दो पदोंका एकशेष समास होनेपर द्विवचनान्त और द्विवचनान्त वा बहुवचनान्त दो पदोंका अथवा बहुपदोंका एकशेष होनेपर अवशिष्ट पद बहुवचनान्त होता है।

(२) समानाकारविशिष्ट स्त्रीवाचक पदके साथ समास होनेपर पुंवाचक पद अवशिष्ट रहता है। किन्तु शब्दोंमें स्वरूपगत विषमता होनेपर एक शेष समास नहिं होता। जैसे,—हंसश्च-हंसी च-हंसौ। हंसश्च सारसी च-हंससारस्यौ।

(३) मातापितरौ, श्वश्रूश्वशुरौ इसप्रकार भी होता है।

(४) नपुंसकलिंगी पद भिन्नपदके साथ समासित होनेपर शेषका पद नपुंसकलिंगी ही रहता है और एकवचनत्व विकल्पसे होता है किन्तु नपुंसकलिंगी शब्दके साथ नपुंसकलिंगीका समास हो तो एकवचन नहिं होगा। जैसे,—शुक्लं च शुक्लं च शुक्लं च - शुक्लानि।

बहुव्रीहिसमास।

——.o:——

२११। जिन पदोंमें समास किया जाय उन पदोंमेंसे यदि किसी पदके अर्थकी प्रतीति न होकर अन्य पदार्थकी प्रतीति होय तो उसको बहुव्रीहि समास कहते हैं। इस समासके करते समय द्वितीयासे सप्तमीपर्यंत विभक्तिसहित यद् शब्दका प्रयोग होता है और वह समासान्त पद विशेषण हो जाता है। जैसें,—आरूढो वानरो य स–आरूढवानरो वृक्ष.। गृहीता यष्टि. येन स —गृहीतयष्टिः पुरुष:, दत्त वस्त्र यस्मै स:–दत्तवस्त्र. दरिद्र., गृहीत उपदेशः यस्मात् स:–गृहीतोपदेश· गुरु·, पीत अम्बर यस्य स:–पीताम्बरः हरि। पवित्र सलिलं यत्र सा—पवित्रसलिला नदी।

२१२ बहुव्रीहि और कर्मधारय समासमें पूर्वपद यदि स्त्रीलिंगीका विशेषण होय तो पुंवत् हो जाता है। जैसें,-स्थिरा बुद्धिर्यस्य स.—स्थिरबुद्धिः। किन्तु पूर्वपद यदि जातिवाचक व नामवाचक होय तो पुंवद्भाव नहिं होता। जैसें —ब्राह्मणी भार्या यस्य स:–ब्राह्मणीभार्यः। शूद्रीभार्यः। नामवाचक जैसें, -जानकीभार्यः। रेवतीजाय। इत्यादि।

२१३। कितने ही इकारान्त शब्द, ऋकारान्त शब्द, अस् भागान्त शब्द, व अर्थ शब्दके उत्तर बहुव्रीहिमें क प्रत्यय हो जाता

(१) बहुव्रीहि समासमें पूर्वपद प्राय विशेषण हुवा करता है। कभी दो विशेष्यपदोंमें भी बहुव्रीहि समास होता है। जैसे,-धनु पाणौ, यस्य स,–धनुष्पाणि। नदीमातृको देश।

है। जैसें-पञ्च नद्यो यत्र स. पञ्चनदीक. देश। इसीप्रकार स्थिर-जङ्गमीक। मृतः पिता यस्य सः-मृतपितृक.। उक्तपुस्क.। अन्य मनस्क। व्यूढोरस्क.। निरर्थक। इत्यादि।

२१४ महत् शब्दके त् और तीके स्थानमें आ हो जाता है। जैसें,—महत् बल यस्य स -महाबल। महती सेना यस्य सः महासेन'। इत्यादि।

२१५ नञ्, दुर् सु, मन्द अल्प शब्दके परें मेधा शब्दके उत्तर अस् प्रत्यय हो जाता है। जैसें,-नास्ति मेधा यस्य स -अमेधा। सुमेधा। मन्दमेधा'। इत्यादि।

२१६। नञ्, दुर् सु शब्दके परें प्रजा शब्दके उत्तर भी अस् प्रत्यय हो जाता है। जैसें,—अप्रजाः। दुष्प्रजा। सुप्रजा।

२१७ बहुव्रीहि समासमें धर्म शब्दके उत्तर अन् प्रत्यय होता है। जेसे,=विगतो धर्मो यस्य सः-विधर्मा। समानधर्मा। सुधर्मा। बहुधर्मा। मुनिधर्मा इत्यादि।

२१८। सह शब्दके साथ तृतीयान्त पदका समास होनेपर सह के स्थानमें विकल्पसे स होता है। जैसें,-पुत्रेण सह वर्त्तमानः सपुत्र। सघृत अन्नम्। सचन्दन पुष्प पक्षमें सहपुत्र। इसको ही तुल्य योगे बहुव्रीहि कहते हैं।

२१९ बहुव्रीहि, कर्मधारय और अव्ययीभाव समासमें अक्षि शब्दके स्थानमें अक्ष हो जाता है। स्त्रीलिंगमें अक्षी हो जाता है। जैसें-विशाले अक्षिणी यस्य सः=विशालाक्षः। स्त्री—विशालाक्षी।

---

(१) उत्पत्स्यतेऽस्ति मम कोऽपि समानधर्मा। भवभूति।

२२७ कर्मधारय और तत्पुरुष समासमें सर्व, एकदेशवाचक, दो आदिक संख्यावाचक और अव्यय शब्दके पर स्थित अहन् शब्दके स्थानमें अह्न आदेश हो जाता है. जैसे,—सर्व अह्नः= सर्वाह्नः, पूर्व अह्नः=पूर्वाह्नः, साय अह्नः=सायाह्नः, मध्य अह्नः =मध्याह्नः, अपर अह्न =अपराह्नः, अन्यत्र एकं अह्नः=एकाहः।

२२८ कर्मधारय और तत्पुरुष समासमें सखि शब्दके इके स्थानमें अ और राजन् तथा अहन् शब्दके न् का लोप हो जाता है, जैसे, -प्रियः सखा=प्रियसखः, महान् राजा—महाराजः, पवित्र अहः=पवित्राहः, इत्यादि.

२२९ विशेषण विशेष्यमें कर्मधारय होय तो उसको विशेषण कर्मधारय समास कहते हैं, जैसे अत्यंतमधुरः, परमदयालुः, परमसुन्दरः, इत्यादि.

२३० जातिवाचक शब्दके साथ धूर्त शब्दका समास होनेपर धूर्त शब्दका परनिपात होता है, जैसे—धूर्तः क्षत्रियः=क्षत्रियधूर्तः। कवि शब्दका विकल्पसे परनिपात होता है, जैसे—कविकालिदासः अथवा कालिदासकविः, इस कर्मधारय समासको समानाधिकरण समास भी कहते हैं

रूपक और उपमित समास।

२३१ जहांपर रूपक अथवा उपमा समझी जाय वहांपर दो विशेष्य पदोंमें समास होता है, सूर्यरूपः सिंहः=सूर्यसिंहः, पद्ममिव मुखं=पद्ममुखम्, पुरुषः सिंहः इव=पुरुषसिंहः, नरव्याघ्रः, नृसिंहः, इत्यादि।

मध्यपदलोपी कर्मधारय।

२३२ इस समासमें विशेषणबोधक मध्यवर्ती पद लुप्त हो जाता है जैसे —

विन्ध्यनामक गिरिः = विन्ध्यगिरि,, कर्मनामक कारकम् = कर्मकारकम्, सुवर्णनिर्मितो हार = सुवर्णहार, दधिपूर्ण भाण्ड — दधिभाण्डम्, घृतमिश्रित अन्नम् — घृतान्नम्, योगे रतस्तापसः — योगतापस, मधुप्रिया मक्षिका — मधुमक्षिका, परशुयुक्तो राम — परशुराम, स्वर्णमुद्रा काष्ठपुत्तलिका, ताम्रपात्रम्, गुड़पिष्टक, गोयानम्, इत्यादि।

२३३ इस समासमें सङ्ख्यावाचक शब्दोंके परे 'अधिक' शब्द का लोप हो जाता है, जैसे,—पञ्चाधिका दश — पञ्चदश, सप्ताधिका विंशतिः — सप्तविंशति।

२३४ दश, विंशति, त्रिंशत्, शब्दके परे रहते द्विके स्थानमें द्वा, त्रिके स्थानमें त्रय और अष्टन्के स्थानमें अष्टा आदेश हो जाता है और चत्वारिंशत्, पञ्चाशत्, षष्टि, सप्तति और नव ति शब्दके परे रहते विकल्पसे होता है, जैसे,—द्व्यधिका दश — द्वादश, त्र्यधिका दश = त्रयोदश, अष्टाधिका दश = अष्टादश, द्व्यधिका चत्वारिंशत् — द्वाचत्वारिंशत् वा द्विचत्वारिंशत्, इत्यादि

अन्यत् वन — वनान्तरम्, अन्यद् गृह — गृहान्तर, अन्या लता — लतान्तरा, अन्यो वृक्षः — वृक्षान्तरम्, इत्यादि स्थलोंमें दीर्गसिंह कहते हैं, कि अन्य शब्दके स्थानमें अन्तर आदिष्ट होकर परनिपात और क्लीबलिङ्ग होता है और पाणिनि आदिक सुप्सुपासमास होना कहते हैं

तत्पुरुष समास

---:०:---

२३५ जिस समासमें पूर्वपदस्थ द्वितीयादि विभक्तियोंका लोप होकर उत्तर पदके साथ एक पद होता है, उसका नाम तत्पुरुष * समास है, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी और सप्तमी भेदसे तत्पुरुष ६ प्रकारका है, समासित पदमें लिंग परपदका होता है

द्वितीयातत्पुरुष।

२३६ श्रित, आश्रित, अतीत आदिक पदोंके योग होनेपर द्वितीयाका लोप होनेसे द्वितीयातत्पुरुष होता है, जैसे,-कष्ट आश्रितः—कष्टाश्रितः, दुःख अतीत.—दुःखातीत., गृहं गत —गृहगतः, भय प्राप्त —भयप्राप्त, विपदापन्नः, वृक्षारूढ, दूरगामी, अन्नबुभुक्षुः, सुखेप्सु, शत्रुनिराकरिष्णुः, वेदविद्वान्, शास्त्रविदुषी, इत्यादि

२३७ क्रियाविशेषणकी जगह भी द्वितीयातत्पुरुष होता है. जैसे,—स्पष्ट कथित —स्पष्टकथित., द्रुत गत.—द्रुतगतः, शीघ्र कृत—शीघ्रकृत, इत्यादि

---

* "विभक्तयो द्वितीयाद्या नाम्ना परपदेन तु।
समस्यन्ते समासो हि ज्ञेयस्तत्पुरुषः स च" ॥ १ ॥

(२) गत, प्राप्त, आपन्न आरूढ, पतित, अभ्यस्त, गामी, गमी, बुभुक्षु, ईप्सु, निराकरिष्णु, जिष्णु विद्वान्, सक्रांत इत्यादि।

तृतीयातत्पुरुष।

२३८ पूर्व पदकी तृतीया विभक्तिका लोप होकर एकपद होनेको तृतीयातत्पुरुष समास कहते हैं, जैसे,–दण्डेन आहतः –दण्डाहतः, रज्जुना बद्धः–रज्जुबद्ध, बाणविद्धः इत्यादि

२३६ प्रकृति, आचार, व्यवहार, वयस्, वर्ण, गमन, भय, विरह, स्वेद, गुण, और अङ्ग प्रभृति शब्दोंके परे कोई विशेषणपद आवे तो तृतीयातत्पुरुष होता है, जैसे —प्रकृत्या सुन्दर = प्रकृति-सुन्दरः, इसीप्रकार आचरणपण्डित, वयोज्येष्ठ, वर्णशङ्कर:, गमनमन्थर:, भयविह्वलः, इत्यादि।

२४० समार्थ, ऊनार्थ, कलह, युद्ध, सम्पर्क, मिश्र, आदिक शब्दोंके योगमें तृतीयातत्पुरुष होता है, जैसे,–भ्रात्रा सम = भ्रातृसम। पकेन ऊन = पकोन, बुद्धिहीनः, जलशून्य वाक्कलहः गदायुद्धम्, इत्यादि.

२४१ अक्ष पाशकादि शब्दोंके योगमें तृतीयातत्पुरुष होता है, जैसे,–अक्षैः क्रीडा = अक्षक्रीडा, पाशक्रीडा, कन्दुकक्रीडा, इत्यादि

चतुर्थीतत्पुरुष।

२४२ पूर्वपदकी चतुर्थी विभक्तिका लोप होनेसे चतुर्थीतत्पुरुष समास होता है, जैसे,—इन्द्राय दत्तम् = इन्द्रदत्त, जगते हित = जगद्धित, यूपाय दारु = यूपदारु इत्यादि.

पञ्चमीतत्पुरुष।

२४३, पूर्वपदस्थ पञ्चमी विभक्तिका लोप होनेसे पञ्चमी-तत्पुरुष समास होता है, जैसे,- वृक्षात् पतित = वृक्षपतित,

भ्रष्टः = धर्मभ्रष्ट, ब्राह्मणात् इतरः = ब्राह्मणेतरः, तस्मात् अन्यः = तदन्यः, व्याघ्रात् भय = व्याघ्रभय, इत्यादि

षष्ठीतत्पुरुष ।

२४४ पूर्वपदस्थ षष्ठी विभक्तिका लोप होकर जो समास होता है, उसे षष्ठीतत्पुरुष कहते हैं, जैसे,–गङ्गायाः जलं = गङ्गाजलं, राज्ञः पुत्रः = राजपुत्र, हितस्य उपदेशः = हितोपदेशः, इत्यादि.

२४५ दुग्ध, अण्ड, मांस, शावक आदि शब्दोंके योगमें छागी हंसी प्रभृतिका पुंवद्भाव हो जाता है, जैसे,–छाग्याः दुग्धं = छागदुग्ध, हंसाण्डम्, छागमांस, मृगशावकः. इत्यादि

ब्रह्मवर्चसं, पुरुषायुषं, वनस्पतिः, बृहस्पतिः, विश्वामित्रः, नयाशः प्रभृति निपातनसे सिद्ध हैं.

सप्तमीतत्पुरुष ।

२४६ पूर्वपदस्थ सप्तमी विभक्तिका लोप होकर एकपद होनेको सप्तमी तत्पुरुष कहते हैं, जैसे —रणे पण्डितः = रणपण्डितः क्रीडायां निपुणः = क्रीडानिपुणः, व्यायामे कुशलः = व्यायामकुशलः इत्यादि.

२४७, निर्द्धारणमें सप्तमीतत्पुरुष ही होता है, षष्ठी तत्पुरुष नहिं होता, जैसे,- पुरुषेषु उत्तम = पुरुषोत्तमः, कोई २ व्याकरणवाले पुरुषसिंहः इत्यादि स्थानोंमें सिंह इव पुरुष. इस प्रकार उपमित समास नहिं कह कर पुरुषेषु सिंह = पुरुषसिंहः इस प्रकार कहते हैं.

अव्ययीभाव.

२५२ जिस समासमें पूर्वपद अव्यय हो, और कारक, सामीप्य, वीप्सा, पर्यंत, योग्यता, पश्चात्, अनतिक्रम, अनुपूर्व, अभाव इत्यादिकोंसे किसी अर्थको प्रगट करे उसको अव्ययीभाव समास कहते हैं. इस समासमें पूर्वपद क्लीबलिंगी हो जाता है. समास करनेके समय अव्ययपद उत्तर भागमें रहता है किन्तु पीछेसे पूर्वनिपात हो जाता है

२५३, अव्ययीभाव समासमें अकारान्त शब्दके परे पचमी, सप्तमी विभक्तिके सिवाय समस्त विभक्तियोंके स्थानमें म् होता है और अन्य स्वरान्त शब्दोंकी विभक्तिका लोप मात्र होता है, जैसे

उप—सामीप्यार्थमें { वनस्य समीपे—उपवनम्, कुलस्य समीपे—उपकुलम्

अधि—कारकार्थमें { पर्वते अधि—अधिपर्वतम्, गिरौ अधि—अधिगिरि

प्रति—प्रत्यर्थमें { अर्जुनं प्रति—प्रत्यर्जुनम्, बालस्य प्रति—प्रतिबालम्

अभि—आभिमुख्यार्थमें—कृष्णस्याभिमुख—अभिकृष्णं

प्रति, अनु } वीप्सार्थमें { युगे युगे—प्रतियुगम्, दिने दिने—अनुदिनम्

आ—पर्यन्तार्थमें—आसमुद्रम् (समुद्रपर्यन्तम्)

अनु { योग्यतार्थमें { रूपस्य योग्यं—अनुरूपम्
पश्चात् अर्थमें { रामस्य पश्चात्—अनुरामं }

यथा—अनतिक्रमार्थमें—शक्तिमनतिक्रम्य—यथाशक्ति

निर् नञ् दुर्	अभावार्थमें	विघ्नस्याभाव. – निर्विघ्नम् पापस्याभाव —अपापम् भिक्षाया अभाव.—दुर्भिक्षम्

२५४। अव्ययीभाव समासमें शरद्, चेतस्, मनस् हिमवत्, दिव् दिश् शब्दके उत्तर अ प्रत्यय होता है जैसे-शरद. समीपम्=उपशरदम्। चेतसि—अधिचेतसम्। मनसि-अधिमनसम्। अधिहिमवतम्। प्रतिदिशम्। इत्यादि।

२५५। प्रति और अभि शब्दके योगमें अभिमुख अर्थमें अव्ययीभाव होता है। जैसे,—प्रत्यग्नि शलभा पतन्ति। विप्रा अभिपुर धावन्ति। वाति गन्ध. सुमनसा प्रतिवात सदैव हि। (रामायणमें)

अलुक् समास।

२५६। समासवाक्य होकर भी विभक्तिका लोप नहिं हो तो, उसको अलुक् समास कहते हैं। जैसे,—युधिष्ठिरः। कर्णेजप। पङ्केरुहम्। अन्तेवासी। खेचर। भ्रातुष्पुत्रः। वनेचरः। मनसिज। इत्यादि।

नित्यसमास।

२५७। उपसर्गके साथ तथा अल, तिरस्, अच्छ प्रभृति अव्ययोंके साथ धातुका जो समास होता है तथा इव और अर्थ शब्दके साथ जो एकपदीभाव होता है उसे नित्य समास कहते हैं। जैसे, प्रदत्तम्, अलङ्कारः, अग्रणकारः, तिरस्कृत्य, जलेव, पाठार्थं शयनार्थं इत्यादि.

अधिराज', पश्चार्द्धम्, परस्पर, कान्यकुब्ज, प्रमदानां वन=

प्रमद्वन, निःश्रेयसम्, सरजसम्, अष्टावक्रः, ये सब निपातनसे सिद्ध हैं

तथा कितने एक प्रयोगोंमें नञ्के स्थानमें अ नहिं होता, जैसे,— नखम्, नमुचिः, नाकः, नक्रः, नपुंसकम्, नकुलः, नगः, इत्यादि.

सुप्सुपासमास ।

२५८ पूर्वोक्त ६ समासोंके द्वारा जिन सब पदोंका तात्पर्य ग्रहण नहि होता, उस जगह सुप्सुपासमास होता, जैसे,—अग्रे पीतं पश्चात् उद्गीर्णम्=पीतोद्गीर्णं । सुप्तोत्थितः । जीवन् अथ च मृतः =जीवन्मृत. । नरः अथ च सिंहः=नरसिंह । दारुभूत । स्नाता-नुलिप्त । गतप्रत्यागतः । अभ्यक्तस्नातः । कृतान्तम् । गतागतम् । वस्त्रापहृतम् इत्यादि । कोई २ वैयाकरणी वनान्तर आदिको भी सुप्सुपासमास कहते हैं ।

तद्धित प्रकरण.

२५९ शब्दोंके उत्तर त्व, तर, इष्ठ इत्यादिक प्रत्ययोंसे नये २ शब्द बन जाते हैं, उनको तद्धितप्रत्यय कहते हैं.

त्व और ता (तल्)

२६० । भाव अर्थमें शब्दके उत्तर त्व और ता प्रत्यय होते हैं । त्व प्रत्ययान्त शब्द नपुंसकलिंग और ता प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिंग होता है, जैसे,—निपुणाया. निपुणस्य वा भावः निपुणता, निपुणत्व, साधोः साध्व्याः वा भाव. साधुत्व, साधुता, जडस्य भावः जडता वा जडत्व, मम(अव्यय)भावः=ममता वा ममत्व इत्यादि.

वत् (वतिच्)

२६१ सादृश्यार्थमें शब्दके उत्तर वत् वतिच् प्रत्यय होता वत् प्रत्ययान्त शब्द अव्यय होता है, जैसे- गुरुरिव गुरुवत् जलमिव-जलवत्, मातृवत् पितृवत्, पुत्रवत् इत्यादि।

वत् (वतु) और मत् (मतु)

२६२। अकारान्त आकारान्त शब्दोंके उत्तर तथा विद्युत् मरुत् पयस् लक्ष्मी और तडित आदिक शब्दोंके उत्तर अस्ति (है) अर्थमें वत् (वतु) प्रत्यय होता है। जैसे,—धन अस्ति अस्य= धनवान्। गुणवान्। विद्यावान्। स्त्री-धनवती। गुणवती। तथा विद्युत्वान्, मरुत्वान्। पयस्वान्। लक्ष्मीवान्। तडित्वान् इत्यादि

२६३। जिन शब्दोंके अन्तमें नामी स्वर हैं उनके उत्तर मत् (मतु) प्रत्यय होता है। जैसे—बुद्धिरस्ति यस्य स.-बुद्धिमान्। श्रीमान्। भानुमान्। अंशुमान्। गरुमान्। स्त्री-बुद्धिमती। श्री मती। इत्यादि।

विन्

२६४। अस्ति अर्थमें अस् भागान्त शब्द, तथा माया मेधा और स्रज् शब्दके उत्तर विन् और वतु दोनों ही प्रत्यय होते हैं। जैसे,-यशो अस्ति यस्य स. = यशस्वी, यशस्वान्। मायावी, मायावान्। मेधावी। स्रग्वी। इत्यादि। स्त्री—यशस्विनी।

(१) शब्दमें एकसे अधिक स्वर नहि होय तो नहि होता।

इन्।

२६५ अस्ति अर्थमें एकसे अधिक स्वरवाले अकारान्त आकारान्त शब्दोंके उत्तर इन् प्रत्यय विकल्पसे होता है। जैसे—ज्ञानं अस्ति यस्य सः-ज्ञानी। मानी। धनी। वनमाली। पक्षमें,-ज्ञानवान् इत्यादि। स्त्री-ज्ञानिनी। किन्तु केशान्त शब्द सुख दुःख मनीषा और धर्मान्त शब्दोंके उत्तर नित्य इन् होता है। जैसे,—कुटिलकेशी। सुखी। दुःखी। मनीषी। वैष्णवधर्मी। जैनधर्मी। विधर्मी इत्यादि। कुटिलकेशवान् या वैष्णवधर्मवान् इत्यादि नहिं हो सक्ता।

तर (तरप्) और तम (तमप्)

२५६ दोमेंसे एकको उत्कृष्ट बतानेमें तर और बहुतमेंसे एकको उत्कृष्ट बतानेमे तम प्रत्यय होता है। किन्तु स्त्रीलिंग हो तो पुंवद्भाव हो जाता है। जैसे,—अय अनयो अतिशयेन पण्डितः-पण्डिततर। अयं एषु अतिशयेन साधु-साधुतमः। गुरुतरः। गुरुतमः। मन्दतर। मन्दतम। इयं आसामतिशयेन सुन्दरी= सुन्दरतमा। इयमनयोरतिशयेन विदुषी= विद्वत्तरा इत्यादि।

इष्ठ (इष्ठन्) ईयस् (ईयसु) और इमन्।

२६७ दो अथवा बहुतमेंसे एकको उत्कृष्ट समझा जाय तो गुणवाचक शब्दोंके उत्तर इष्ठ (इष्ठन्) और अतिशयार्थमे ईयस् (ईयसु) तथा भावार्थमें गुणवाचक शब्दोंसे उत्तर इमन् प्रत्यय होता है। जैसे,—लघिष्ठः, लघीयान्। पापिष्ठः पापीयान्। महिष्ठः,

महीयान्। इमन्-नीलस्य भावो नीलिमा। रक्तिमा। अणिमा। महिमा। लघिमा। गरिमा। जड़िमा। कालिमा। इत्यादि।

मय (मयट्)

२६८ स्वरूप विकार ख्याति संसर्ग आदि कितने ही अर्थोंमें शब्दके उत्तर मय (मयट्) प्रत्यय होता है। जैसे,—आनन्दमयः। मृण्मयम्। चिन्मयः। जलमयः। पापमयी। हिरण्मयः। हिरण्य शब्दके य का लोप हो जाता है।

सात् (सातिच्)

२६९ परिणत, अधीन और देय अर्थमें सात् (सातिच्) प्रत्यय होता है। सात् प्रत्ययान्त शब्द अव्यय होते हैं। जैसे,—धूलिरूप करोति धूलिसात् करोति। विप्राय देय करोति= विप्रसात् करोति। आत्मसात्। भस्मसात्। अग्निसात् इत्यादि।

तस् (तसिल्)

२७० शब्दके उत्तर समस्त विभक्तियोंके स्थानमें तस् प्रत्यय होता है। जैसे,—प्रथमे-प्रथमतः। अर्धेन-अर्धतः। लोकात्-लोकतः। वृत्तात्-वृत्ततः। अग्रे-अग्रतः। कस्मात् कुतः। अस्मात्-इतः। तस्मात्-ततः। यस्मात् यतः। पुरतः। अन्ततः। पृष्ठतः। इत्यादि।

तन (तनस्)

२७१ भव अर्थमें अद्य, पुरा, अधुना, इदानीम् तदानीम्, पूर्व, ऊर्ध्व, अध., चिर, साय, प्राक्, उपरि और सदा शब्दके उत्तर तन प्रत्यय होता है। जैसे,—अद्य भव =अद्यतन। पुरा-

तनं पुस्तकम्। इदानीन्तनी रीतिः। पूर्वतनः। अधस्तनः। चिरन्तन इत्यादि।

चित् और चन।

२७२ अनिश्चयार्थमें विभक्तिसहित किम् शब्दके परे चित् और चन प्रत्यय होते हैं। जैसे,—केचित् कश्चन। किञ्चित्। क्वचित्। कदाचित्। कुत्रचित्। केञ्चित्। कस्मिंश्चित्। केनचित्। कदाचन इत्यादि।

धा (धाच्) और था (थाच्)

२७३ प्रकार अर्थमें संख्यावाचक शब्दोंसे उत्तर धा (धाच्) और सर्वनाम शब्दोंके उत्तर था (थाच्) प्रत्यय होता है। धा था प्रत्ययान्त शब्द अव्यय होते हैं। जैसे,—एकधा। द्विधा। त्रिधा। चतुर्धा। पञ्चधा। सर्वथा। अन्यथा। यथा। तथा। उभयथा इत्यादि।

त्र और दा।

२७४ सर्वनाम शब्दोंकी सप्तमी विभक्तिके स्थानमें त्र प्रत्यय होता है। किन्तु कालवाचक होनेसे दा होता है। जैसे,—सर्वस्मिन्=सर्वत्र। सर्वस्मिन् काले=सर्वदा। अन्यस्मिन्=अन्यत्र। अन्यस्मिन्काले=अन्यदा। यस्मिन्=यत्र, यदा। तत्र, तदा। एकत्र, एकदा। कुत्र, कदा। सदा। नित्यदा। इत्यादि।

शस् (चशस्)

२७५ वीप्सा अर्थमें शस् (चशस्) प्रत्यय होता है। शस

प्रत्ययान्त शब्द अव्यय होता है। जैसे,—क्रमे क्रमे क्रमश। अल्पशः। बहुश.। गणशः। शतशः। इत्यादि।

इ (ष्णि) एय (ष्णेय) य (ण्य) आयन (ष्णायन) इक (ष्णिक्) अ (ष्ण)

२७६ अपत्य अर्थमे तथा विकार, भाव, भव, आदि अर्थोमें ष्णि आदिक ११ प्रत्यय होते हैं। और पूर्वका स्वर वृद्धि हो जाता है। जैसे,—दशरथस्य अपत्य दाशरथि। शूरस्य-शौरिः। मरुत—मारुतिः। गङ्गा— गाङ्गेय। भगिनी-भागनेय। कुन्ती-कौन्तेय.। संख्य-सांख्यः। गर्ग-गार्ग्य.। शकटस्यापत्य शाकटायन। शकटात् भव =शाकटायन व्याकरणम्। पितृष्वस्रीय। भ्रातुरपत्य-भ्रात्रीयः। अश्वपाल-अश्वपालिका। रघु राघवः। यदु-यादव। मनु-मानव। वसुदेव वासुदेव। शाब्दिकः। तार्किक.। सौवर्ण। राजतः। वात्या। चर्म्या। वार्द्धक्य। नैपुण्य। वैराग्यं। आतिथ्य। मानवीय। शैवः। शाक्तः। वैष्णवः। जैनः। सभ्य.। पथिक.। त्रैलोक्य। कारुण्य। कौतुक। नव्य। इत्यादि।

उपर्युक्त प्रकारसे तद्धितके अनेक प्रत्ययोंसे असख्य शब्द बनते हैं सो कठिनता और विस्तार भयसे यहा थोड़ेसे लिख दिये हैं।

समाप्तोऽयं पूर्वार्द्धः।

---

(१) ष्णि, ष्णेय, ष्य, ष्णायन, णीय, ष्णिक, ष्ण, ष्णीय कण, णीन्, ईय्।